मानव मन्दिर

नवम्बर-दिसम्बर- 2020 (वर्ष-47 अंक 11-12)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याण और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक :

परमसन्त परमदयाल पं फ़कीर चन्द जी महाराज

दयाल कमल जी महाराज
09418370397

प्रबन्धक सम्पादक

पं. ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान)
09877490267

प्रकाशक

राणा रणबीर सिंह *(जनरल सैक्रेटरी)*
09463115977

अनुक्रमणिका

1. आरती - 02
2. माता जी स्व. निर्मला पंडित जी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि - 05
3. हजूर परमदयाल जी महाराज : सतंस्ग- 09, प्रवचन- 48,
   विश्व धर्म - 71,
4. दानी सज्जनों की सूची - 88

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है।
शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

Faqir Library Charitable Trust (Regd.)
Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur-146001 (Pb) Ph: 01882 243154
email: manavmandir68@gmail.com
web: www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

मूल्य 20/-

आरती

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
अलख अगम और अनामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया॥
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
बन कर आये परम फकीर, हरने सब जीवों की पीर॥
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
राम भी हो और कृष्ण भी तुम॥
तुम महावीर और बुद्ध गौतम॥
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम॥
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥

सबको राधास्वामी

परमदयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज ने अपने गुरु दातादयाल जी महाराज की हिदायत के मुताबिक अपने रूहानी सफर से मानव-जाति के रूहानी तथा दुनियावी कल्याण के लिये 'इन्सान बनो' का नारा दिया तथा उस मिशन को मानवता के झंडे के रूप में दशहरा के शुभ अवसर पर रेलवे-मण्डी, जो कि तपस्थली भी है पर दयाल कमल जी महाराज तथा सुषमा बहन जी, अभय डोगरा तथा अन्य सत्संगी भाई-बहनों की देखरेख में चढ़ाया गया।

18 नवम्बर 2020 को महाराज जी के अवतार दिवस पर दयाल कमल जी महाराज तथा आचार्य कुलदीप शर्मा जी ने परमदयाल जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सत्संग दिया। उनके समाधि-स्थल तथा मंदिर को भी सजाया गया तथा लंगर रूपी प्रसाद का आयोजन किया गया।

इस कोरोना काल में जबकि दुनिया पर आर्थिक संकट छाया हुआ है, परमदयाल जी महाराज के देश तथा विदेश में बैठे सत्संगी परिवारों ने धनराशि भेज कर, जो कि आज तक भेजते आ रहे हैं। फकीर चैरिटेबल ट्रस्ट इनके द्वारा भेजी गयी नेक कमाई की राशि की एक-एक पाई मंदिर के भिन्न-भिन्न कार्य पर खर्च कर रहा है। फकीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट उनका तहेदिल से आभार प्रकट करता है।

शाह पदमजंग जी, जो कि परमदयाल जी महाराज के सुपुत्र हैं, 11 अक्तूबर 2020 को उनका 91वाँ जन्म दिवस था उसके लिए उनके सारे परिवार को मानवता मंदिर परिवार की तरफ से शुभकामनाएं। सारे परिवार ने महाराज जी की हिदायत के मुताबिक ट्रस्ट को हमेशा सहयोग दिया है। मैं सैक्रेटरी राणा रणबीर सिंह जी का आभार व्यक्त करता हूँ तथा ट्रस्टी विजय डोगरा जी का धन्यवाद करता हूँ। राधास्वामी जी

पं. ब्रह्मशंकर जिम्पा,
ट्रस्ट प्रधान, फकीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट
होशियारपुर, पंजाब, मोब.- 9877490267

हमारे मन में इच्छा थी कि कोरोना महामारी से कुछ राहत मिल गई, तो बाबा जी का जन्मोत्सव अपने प्रिय सत्संगी भाई-बहनों के साथ हर्षोल्लास के साथ मनायेंगे परन्तु ऐसा नहीं हुआ तथा हम आपके दर्शनों से वंचित रह गए। मैं तो यही कहूँगा कि ये सब परमदयाल जी महाराज के हुक्म से ही हो रहा है तथा हमें इसे स्वीकार करना चाहिए। मेरा सभी भाई-बहनों से अनुरोध है कि अपना तथा अपने परिवार का विशेषकर बच्चों व बुर्जुगों का खास ख्याल रखें।

जैसा मैंने ऊपर लिखा है कि हमारी भावना थी कि बाबा जी का जन्मोत्सव मनाया जाये। हमने दयाल कमल जी महाराज तथा आचार्य कुलदीप शर्मा जी की आज्ञा लेकर एक छोटे पैमाने पर 18 नवम्बर 2020 को सत्संग का आयोजन किया। बाबा जी की कृपा से सत्संग का आयोजन इतना भव्य व सुंदर था जिसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। होशियारपुर के आस-पड़ोस के सत्संगी भाई-बहनों ने सत्संग में उपस्थित होकर हमें आभारी बनाया।

मुझे ये बताने में खुशी हो रही है कि हमारे माननीय ट्रस्ट प्रधान पं. ब्रह्मशंकर जिम्पा जी को पंजाब सरकार द्वारा P.S.I.D.C. में सीनीयर वाईस चैयरमैन नियुक्त किया गया है, जो हमारे लिए गर्व की बात है हम उनको इस अवसर पर शुभकामनाएँ देते हैं।

मैं बाबा जी से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे ऊपर दयाल कमल जी महाराज, आचार्य कुलदीप शर्मा जी, आचार्य अरविन्द पाराशर जी तथा समस्त आचार्यगणों का आशीर्वाद बना रहे तथा हमें अपने प्रधान पं. ब्रह्मशंकर जिम्पा जी के दिशा-निर्देश तथा समस्त ट्रस्टीगणों का सहयोग मिलता रहे। मुझ से अगर कोई गलती हुई हो, तो मैं क्षमा-याचना करता हूँ। सबको राधास्वामी!

संगत का दास
राणा रणबीर सिंह
सचिव, मानवता मन्दिर, होशियारपुर
मो.- 09463115977

श्री सद्गुरुदेव सहाय

मेरी माँ निर्मला पंडित जी के देहावसान होने पर मानवता मंदिर में मेरा पत्र छपवाने के निवेदन के पीछे एक उद्देश्य है। उनका देहावसान 27 सितम्बर को हुआ।

1967 में, माँ को उनके गुरु स्वामी गोविंद कौल जी ने जो परमदयाल जी महाराज के गुरुभाई थे, कश्मीर से होशियारपुर भेजा। माँ परमदयालमय हो गई और प्रतिवर्ष परमदयाल जी महाराज मुंबई आने लगे।

परमदयाल जी महाराज के प्रति माँ का पूर्ण रूपेण समर्पण और एकात्मता ऐसी थी कि कश्मीर से अमरनाथ जाते हुए, माँ को नदी में डूबने से परमदयाल जी महाराज ने बचाया। माँ ने सेब की पेटी होशियारपुर भिजवाई थी, अपने पत्र के साथ। मैं तब होशियारपुर में ही था। परमदयाल जी महाराज बोले, तेरी माँ ये समझती है कि मैंने उसे पहाड़ी नदी में डूबने से बचाया लेकिन चूंकि मैं नहीं था, इसलिये ये सेब मेरे लिये जहर हैं। जब परमदयाल जी महाराज मेरी नानी से मिले तो उन्होंने नानी के पैर छुए और कहा कि तेरे पैर छू रहा हूँ क्योंकि तूने निर्मला जैसी बेटी पैदा की है।

यदि मैं परमदयाल जी महाराज के एहसानों का उल्लेख करूं तो एक पूरी किताब बन जाएगी। प्रत्येक माँ अपने बच्चों को लेकर चिंतित रहती है। परमदयाल जी महाराज ने बिना माँ के बोले, माँ को बच्चों के लिए आशीर्वाद दिया। मेरे जैसे अधम, नीच, मदमान की

दुर्गंध से भरे पापी को अपने दिव्य पवित्र चरणकमलों की दीवानगी का कृपा प्रसाद दिया। मुझसे परमदयाल जी महाराज ने कहा था, तू निर्मला की सेवा करना। इसीलिए मैंने निरंतर माँ से जुड़ने की कोशिश की।

परन्तु माँ का आखिरी समय बेहद दर्दनाक रहा। दो महीने वह आई.सी.यू. में ही रहीं। माँ बार-बार घर लौटने को कहती थीं लेकिन बावजूद सारी कोशिशों के वह संभव नहीं हो पाया। आदरणीय दयाल कमल जी महाराज से भी मैंने विनती की।

अब मैं अपना उद्देश्य उजागर करना चाहता हूँ। सत्य के अवतार परमदयाल जी महाराज ने कितनी सच्चाई अपने हर सत्संग में ब्यान की। वे कहते थे कि प्रारब्ध को कोई गुरु नहीं काट सकता। हम गुरुओं के पास जाते हैं कि हमारे दुख दूर करो। परमदयाल जी महाराज बार-बार कहते थे कि इन गुरुओं ने हम भोले-भाले गृहस्थियों को बेवकूफ बनाकर लूटा है, इसलिये ये सारे गुरु महात्मा नरक में गये होंगे। मेरे मन में शंका है कि मेरी माँ ने गुरु बनने के अहंकार का, भले ही वह सूक्ष्म हो, दंड भोगा।

सर्वव्यापी जगत आधार परमदयाल जी महाराज के दरबार में गुहार लगाता हूँ कि मेरी माँ के अपराध क्षमा कर, अपने चरणों में वास दे दें।

- मनोहर पंडित

सत्संग

परमसन्त

हज़ूर परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर, 9.12.73

कोई भागे सुरत तज यह संसार॥
या जग में पूरन सुख नाहीं, खोज करो तुम निज घर बार।
निज घर है ब्रह्माण्ड के पारा, तीन लोक में काल पसार॥
माया संग दुखी रहें सब जीव, कोई न जावे भव के पार।
सच्चा सुख है संत के देशा, याते चलो संत की लार॥
सतगुरु कर उन सेवा करना, प्रीति परतीत चरनन में धार।
वे दयाल तोहि भेद बतावें, सुरत शब्द का मारग सार॥
प्रीति सहित जब करो कमाई, तब जाओ भव सागर पार।
राधास्वामी चरन शरण दृढ़ करले, पाओ उनकी महर अपार॥

आप लोग आये हैं। संत मत क्या सिखाता है ? आज आप लोगों को एक पत्र सुनाता हूँ जो लुधियाना से किसी आदमी ने भेजा है।

लुधियाना

18.11.73

परमसन्त दयाल फकीर चन्द जी महाराज

राधास्वामी !

इस रूह को धक्का खाते हुये 35 वर्ष हो गये। ग्रंथ और पोथियाँ पढ़-पढ़ कर फैंक दीं। दयाल बाग आगरे गया। देहली में संत कृपाल सिंह जी के पास गया। व्यास में बाबा चरनसिंह जी के पास गया। जगह-जगह सत्संग सुने। सन्त महात्माओं और दीन दुखियों की सेवा की। बड़ी-बड़ी थ्योरी पढीं और सुनी। कोई डेरे को बढ़ाने में लगा हुआ है, कोई मानव केन्द्र बनाने में व्यस्त है। कोई मान बड़ाई के लिये काम कर रहा है। कोई पैसे इकट्ठे कर रहा है। जगह-जगह गुरु इज्म चल रहा है। जीवों की भीड़ की भीड़ उमड़ उमड़ कर आ रही है।

बहुत सुना कि यह रूह अनामी देश से मालिके कुल से बिछुड़ कर आई है और यह रूह पिंड, अंड, ब्रह्माण्ड, सच खंड, अगम, अगोचर अपार अनामी देश में वापिस चली जाती है। सूर्य, चन्द्र, सितारे अन्तर में दिखाई आते हैं। लेकिन फकीर ! दुनिया सब कुछ है। दिल मानता है कि जो सन्त महात्मा बताते हैं उन्होंने देखा है, अनुभव किया है। कबीर, गुरु नानक, फरीद की बाणी है। यह बड़ी उच्च कोटि के पुरुष हुये हैं।

भई फ़कीर ! सच्ची बात तो यह है कि बहुत कुछ सुना मगर देखने में कुछ नहीं आया। मुझे तो ऐसा मालुम होता है कि यह सब ढकोसला है। मेरे एक मित्र ने मुझे दो पुस्तकें 'शिव' और 'जनता जनार्दन' एक समाचार पत्र दिया। उसमें आपका भी झंडा देखा तो मन में आया कि 'तैनूं भी देख लूं क्या तू मैं नूं भी अनामी देश, राधास्वामी देश, ताई पहुँचा सकदा है। क्या तू मेरा रहबर बन सकता है। देख फकीर ! सोच ले, सुनिया है तू परमसन्त है परम दयाल है। जे तू दयाल दिली ताकत हैं तो हां कर दे। फिर एक शर्त है। अन्दर बाहर दोनों पासे संभाल करनी होगी। मेरे माँ बाप भी अन्धे हैं। 18 साल तों बीमार है। चारपाई ते रहन्दे हैं। चक के टटी पेशाब करादां। हाँ इस करके घर बिच ही रह करके पूरा करवा सकदे हो। हां हां करना। नहीं

तो आज तों मानवता झंडा बंद कर डिब्बे में सूट देना। फिर की फायदा। जे सच्चा गुरु बन सकदा हैं बता दे। मेंनूं दिखा रूह किस तरह पिंड अंड ब्रह्माण्ड, सच खंड हुंदी हुई अनामी देश या राधास्वामी देश बिच जांदी है। आज तक तो सब कहंदे ही सुना हैं। पर किसी ने रूह नूं खेंच के ऊपर नहीं लियादां इथे कुछ नहीं दिखाया।

कई सालाँ तों रूह बिच एक ख्याल बार बार आंदा है कि इस मनुष्य चोले बिच आके जे अपने घर वापिस राधास्वामी देश विच जाके आत्मा परमात्मा दा अनुभव न कीतां इन्सान ने कुछ नहीं कितां।

आप अपने आपे नूं पाके सारी दुनिया नूं, एक झंडे तले ले आउंदी तड़प है। कलियुग दे जीवां नूं देख के दया आंबदी है। जे कुछ पाइया है तां विस आते मीनूं वी दिखा। मैं आप दे पत्र दा इन्तजार कर रहा हूँ। जल्दी तो जल्दी। जवाब देना। जे असली फकीर हो इते इस रूह भी कबीर, फरीद, गुरु नानक बना दे आगे।

ऐ फकीर! चक ले मानवतादा झंडा जिसे सारी दुनियां विच प्रकाश ही प्रकाश न कर दिता तां आंखीं।

वैसे पेंज शब्द मेरे कौल हैं अपनी तवज्जह देना। ते मार्ग दर्शन करना। अपने सूक्ष्म नूरी स्वरूप बिच अन्दर आके दर्शन देना। ते मार्ग दर्शन करना। उसे समझा देना। ऐ फकीर! यारी लाई है ता तोड़ निभा छड्ड बन इसे भी फकीर दा प्रकाश बन सके। ते कुल मालिक नूं मिल के आना जाना मुक जावे।

जे है हिम्मत तां आ जा मेरे मन दा मन्दिर तेरे वास्ते खाली है। इलाही नूर नाल भरदे।

देख ले मैं कौन हूं हां, ते मेरे अन्दर कौन झलक मार रहा है।

रुहानियत दी दौलत बंडन वालिया भी तेरे दर ते झोली फैला कर खड़ा हां। तेरे दर तों खाली न जाऊं। इन्हां शब्दां नाल मैं पत्र समाप्त करदा। हां आप जी दे इन्तजार विच हां।

Everything should be secret.

आप लोगों ने यह चिट्ठी सुनी। मैंने अपने आपको इस संसार में संत सत्गुरु कहा है। मैं अपने आपसे सवाल करता हूँ कि क्या कोई संत महात्मा किसी आदमी को उस अवस्था में पहुँचा सकता है? मैं क्यों यह सवाल करता हूँ और क्यों यह काम करता हूँ। केवल इसलिये कि संसार के प्राणियों को सच्ची बात, सही रास्ता और सच्चा तरीका जो मेरे अनुभव में आया है वह बता जाऊँ।

इस व्यक्ति के अन्दर तड़प है। इसका कारण क्या है? 18 वर्ष से इसके माँ बाप बीमार हैं। यह उनकी बीमारी से दुखी है और इस दुख से बचना चाहता है। इसको अपने मन की साइकोलोजी का ज्ञान नहीं है। क्या तू या और कोई महात्मा उनको वहाँ पहुँचा सकता है? दूसरों के बारे में कह नहीं सकता मगर अपना अनुभव बता सकता हूँ। जो मेरे गुरुभाई लोग हैं उनको जानता हूं। यह ज्ञान मुझे सत्संगियों से हुआ कृषक जी, दयालदास, कमालपुर वाली माई या सन्त ताराचन्द जिन्होंने अभ्यास किया, जिनके अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ या जिन्होंने अपने अन्तर प्रकाश देखा और शब्द सुने। क्या तुमने इनके शब्द और प्रकाश खोले? जब वह तुमको अपने अन्तर प्रकाश रूप में देखते हैं तो क्या तुमको पता होता है? नहीं। इससे सिद्ध हुआ कि जो भी वहाँ पहुंच सकता है वह अपनी लगन, अपनी मेहनत और अपनी सच्चाई से वहाँ पहुंच सकता है। मैं इस लेख को प्रकशित कराना चाहता हूं ताकि लोगों के संशय भ्रम मिट जाये।

गुरु के रूप को न समझ कर और असलियत को न समझकर

अथवा विश्वास के न होने से मनुष्य के अन्तर तरह-तरह के भ्रम पैदा हो जाते हैं। मैंने अपने आपको सन्त सत्गुरु कहा है। सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके अपने विश्वास, लगन, तड़प और सेवा का फल मिलता है। कोई गुरु या कोई महात्मा किसी को कुछ नहीं देता। देता है तो वह उसको ऐसा ख्याल देता है जिससे जीव को सुगम विधि या तरीका मिल जाय। मैं अपने बारे में बताता हूँ कि मैंने सन् 1905 ई. में नाम लिया। सन् 1916 तक मेरे अन्दर केवल प्रेम ही प्रेम और विश्वास ही विश्वास था। न मुझे शब्द सुनाई दिया और न मैने प्रकाश देखा। उस समय मैं बहुत रोया करता था। मेरे रोने का पता पं. पुरुषोत्तम दास और सेठ दुर्गादास या और आदमी जो मेरे साथ बसरा बगदाद में थे उनको है। सन् 1905 ई. से 1916 ई. तक मुझे क्यों कुछ नहीं मिला? इसलिये कि मेरा विवाह 13 वर्ष की आयु में हो गया और 15 वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन में आ गया था। तो मेरे अनुभव में आया है कि जो आदमी विषय विकार का जीव व्यतीत करता है अथवा जिसका शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य गिर जाता है उनको वह अवस्था नहीं मिलती।

जहाँ काम तहं नाम नहिं, जहाँ नाम नहीं काम।

रबि रजनी दोऊ ना मिले, एक याम यक ठाम॥

हमारी अशान्ति, चिन्ता और संशयों का सबसे बड़ा कारण हमारे शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य की गिरावट है। चार दिन हुये एक युवक मेरे पास आया। उससे पूछा कि किसलिये आये हो तो कहने लगा कि मैं अशान्त रहता हूँ। पढ़ने में मन नहीं लगता। मैंने उससे कहा कि अपने धर्म से कहो कि क्या तुमने अपने हाथ से वीर्य नष्ट नहीं करते हो? वह मान गया।

यह चिट्ठी जो ऊपर लिखी गई है, इसके लेखक को मैंने देखा

नहीं और न मैं उसको जानता हूँ। यदि देख लेता तो शायद कुछ बता देता। दुनिया ने गुरु मत को समझा नहीं। गुरु मत भव सागर से पार लगाने के लिये है। जिन्होंने अपना ब्रह्मचर्य नष्ट किया है या करते हैं, उनको वह वस्तु नहीं मिल सकती। यह मेरे जीवन का अनुभव है। इसका प्रमाण देता हूँ। एक कप्तान था। उसको मालिक के दर्शन की लालसा थी। वह किसी महात्मा के पास गया और कहा कि मुझे मालिक से मिला दीजिये। उन्होंने कहा कि हां मिला दूंगा। उस कप्तान ने उस महात्मा को दस हजार रूपये दिये और उनकी कार का ड्राईवर बन गया। दस वर्ष तक उनकी कार चलाई। इतने समय में न उसको प्रकाश आया और न शब्द सुना। उसने महात्मा पर दावा दायर कर दिया कि उन्होंने मेरा साथ वायदा किया था कि मैं तुमको मालिक या राम से मिला दूँगा। मुझे आज तक कुछ नहीं मिला। अन्त में उस महात्मा के चेलों ने फैसला करा दिया। यह घटना एक समाचार पत्र में प्रकाशित हुई है।

ऐसे ही इस आदमी ने चिट्ठी में लिखा है। मैंने उसको लिखा है कि यद्यपि तुम में सच्चाई की भावना है मगर तुम असभ्य और बे अदब हो। आठ साल हुये वह कप्तान मेरे पास आया और बड़े गर्व से मुझे बताया कि मैंने दावा किया और चालीस हजार रुपया वसूल किया है। यह गुरु मत सब ढोंग है। मैंने उससे कहा कि तुम न शब्द सुन सकते हो और न प्रकाश देख सकते हो। उसने पूछा कि क्यों? मैंने कहा कि तुम अब तक भी अपने हाथ से वीर्य नष्ट करते हो। वह मेरी इस बात को मान गया। मैंने कहा कि जो आदमी या स्त्री व्यर्थ, अनावश्यक या आवश्यकता से अधिक अपने वीर्य को नष्ट करते है उनके भाग्य में शब्द और प्रकाश नहीं है। वह कहने लगा कि मुझे यह बात आज तक किसी ने नहीं बताई। मैंने कहा कि मैं इस बात का जिम्मेदार नहीं हूं। यह तो आपका गुरु जाने या आप जानें।

इसलिये मैं हमेशा स्पष्ट रूप से बात कहता हूँ। यदि तुम शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को नष्ट करते रहोगे तो तुम्हारी सुरत ऊपर नहीं चढ़ सकती। इस चिट्ठी के लिखने वाले के मन में ऐसी बौखलाहट क्यों आई? उसका मैं उत्तर दे रहा हूँ। एक तो उसके घर में उसके माँ बाप 18 वर्ष से बीमार पड़े हैं। वह लिखता है कि मेरे दीन और दुनिया का ठेका लो। कोई सन्त या महात्मा किसी का ठेका नहीं ले सकता। जब सन्तों ने स्वयं रोगों से कष्ट सहे, उनके घरों में भी अशान्ति रही, उनकी सन्तान के आचरण बिगड़े और वह कुछ न कर सके तो मैं कैसे मान लूँ कि कोई सन्त किसी दूसरे का ठेका ले सकता है? अपना-अपना कर्म सबको भोगना पड़ता है। जैसा करोगे वैसा भरोगे। कबीर साहब ने लिखा है—

अरे मन धीरज काहे न धरे।

शुभ और अशुभ कर्म पूर्वले, रति घटे न बढ़े।

अगर सच्चे हृदय से प्रार्थना करो तो हो सकता है कि तुम्हारे विचार की शक्ति से और तुम्हारे विश्वास के कारण तुमको कुछ मिल जाय जैसे लोग मुझे लिखते रहते हैं कि बाबा जी! आप प्रगट हुये और कहा कि आप यह कर गये वह कर गये। किन्तु मैं तो कहीं जाता नहीं और न मुझे पता होता है। दाता दयाल जी का, जिला रोहतक का एक सत्संगी था। उनसे बड़ा प्रेम करता था। प्रति वर्ष भंडारे के अवसर बहुत सा अनाज आदि लेकर जाया करता था। दाता दयाल जी उसके गांव में और उसकी जमीन में कुटिया बनवा कर छः महीने रहे। वहाँ उन्होंने 'कबीर योग' लिखा। उनके प्रशाद से कई आदमियों की टी.वी. ठीक हो गई। उसके भाई को टी.वी. हो गई। वह उसको दाता दयाल के पास धाम में ले गया। उन्होंने कहा कि ठीक हो जायेगा। तुम विश्वास रखो किन्तु वह ठीक न हुआ और मर गया। उसने फिर दाता दयाल जी को बड़ा बदनाम किया। मैं

यह प्रमाण दे रहा हूँ कि कोई सन्त किसी कर्म को नहीं काट सकता। ईश्वर तो एक नियम है। कर्म का कानून तो ऐसा है कि जो करोगे वह भोगना पड़ेगा। इसलिए मैंने जीवन में अनुभव के बाद यह समझा है कि परमार्थ तो बहुत दूर है मनुष्य को पहिले इन्सानियत सीखनी चाहिये ताकि वह अध्यात्म का अधिकारी बन सके। आप लोग यदि अपने जीवन को बनाना चाहते हो तो पहिले इन्सान बनो। शिष्टाचारी बनो और महापुरुषों के सिद्धान्तों के अनुसार चलो। प्राचीन समय में लड़के को 25 वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने की आज्ञा थी। क्यों? क्योंकि हमारे अन्तर वीर्य ईश्वर का स्थूल रूप है। यदि इसको आवश्यकता से अधिक नष्ट करोगे तो अशान्ति का आना अनिवार्य है और तुम सुखी नहीं सकते हो। जो कुछ हमारे साथ होता है वह कुछ इस जन्म के कर्मों का फल है और कुछ प्रालब्ध कर्मों का फल है। अतः हमको अपना कर्म अच्छा बनाना चाहिये। अपने स्वार्थ के लिये किसी से धोखा नहीं करना चाहिये। जो आदमी इन नियमों पर चलता है वह सन्त मत के अनुसार अपने घर जाने का अधिकारी होता है।

मेरे पास बहुत से लोग आते हैं। क्या यह अपने घर जाने के लिये आते हैं। यह तो अपनी सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये आते हैं। इनके विश्वास से इनके काम हो जाते हैं।

चिनूर (आंध्रा प्रदेश) के एक आदमी के लड़का नहीं था। वह मेरे पास आया और प्रशाद ले गया। उसके लड़का पैदा हुआ। उसने मेरी बड़ी प्रशंसा की और मुझे एक तार 62 शब्दों का दिया। मैंने उसको उत्तर दिया कि जो कुछ हुआ तेरे कर्म से हुआ और जो कुछ होगा वह तेरे कर्म से होगा। कल फिर तार आया कि लड़का मर गया। अब बताओ कि जो लोग यह समझते हैं कि गुरु के प्रशाद से लड़का हो गया या और काम हो जाते हैं तो यदि मेरे प्रशाद से ही लड़का होता तो मरता क्यों? दूसरे लोग मेरी तरह

सच्चाई वर्णन नहीं करते और लोग अज्ञान में रहते हैं। जब उनके काम नहीं होते तो फिर वह ऐसी चिट्ठी लिखते हैं जैसी इस लुधियाना वाले ने लिखी है। गुरु नाम है ज्ञान का और अनुभव का मगर यह भी तब मिलता है जब तुम्हारा किसी जगह पूर्ण विश्वास हो। यदि श्रद्धा विश्वास नहीं है तो कुछ नहीं मिलता। नामदेव धन्ना भक्त का विश्वास ही तो था। मुझे इस बात का विश्वास हो गया है कि लोगों के काम होते हैं मगर मुझे पता नहीं होता। यह जितना खेल है विश्वास का है। सन्त ताराचन्द ने मुझे बताया कि वह एक कबीर पंथी मठ में गये। वहाँ एक स्त्री को देखा जिसका बहुत ऊँचा अभ्यास था। उन्होंने उससे पूछा कि माई! तुम कौन सा नाम जपती हो? उसने उत्तर दिया कि 'बकरी की तीन टांग', वह सुन कर बड़ा चकित हुआ। वहाँ के मठाधीश से पूछा कि आपने उसको कौन सा नाम दिया है? उसने कहा कि यह नाम के लिये मुझे नित्य प्रति तंग करती थी। एक दिन मैंने क्रोध में आकर कहा कि नाम है 'बकरी की तीन टांग', उसने उसी को नाम समझ लिया और उसी को जपती है। उसकी जो दशा है वह आप देख रहे हैं। इससे सिद्ध हुआ कि यह सारा खेल तुम्हारे अपने ही विश्वास का है।

मैंने यह सिरदर्दी क्यों मोल ली? मैं तो एक साधारण भक्त था। मैं तो राम कृष्ण या देवी देवताओं के मानने वाला था। मौज मुझे दाता दयाल के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे सन्त मत की शिक्षा दी। उस समय मैंने प्रण लिया था कि मैं सच्चा होकर इस रास्ते पर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। चूंकि मेरे जिम्मे यह ड्यूटी थी इसलिये सच्चाई से यह काम कर चला ताकि जो लोग अपने घर जाना चाहते हैं अथवा अपने सांसारिक जीवन को बनाना चाहते हैं उनको ठीक विधि का पता लग जाय। आजकल अनाधिकारी को तो नाम दिया जाता है। असल

तरीके का उनको पता नहीं है। वे तो केवल मांस और शराब की मना करते हैं मगर इससे तो बेड़ा पार नहीं होगा और भी बहुत सी बातें हैं जो हर एक जीव के लिये अलग-अलग होती हैं।

दाता दयाल जी के चोला छोड़ने बाद मैं एक बार राधास्वामी धाम गया। वहाँ गोरखपुर से कुछ लोग आ रहे थे। उनमें एक जवान लड़का था। वह बहुत मस्त रहा करता था। लोग उसका बहुत सम्मान करते थे और उसको भक्त कहते थे। मैंने उसे दूर से ही देखा और फिर जाकर उसकी बाँह पकड़ ली। कहा कि मैं तेरे लिये ही यहाँ आया हूँ। यह सुनकर लोग अचंभे में आ गये।

मैं दुनिया को कुछ कहना चाहता हूँ। कुछ भेद देना चाहता हूँ।

फिर सत्संग हुआ। मैंने कहा कि तुम इस जगह ठहरो। जब दूसरे लोग चले गये तो मैंने उससे एकान्त में पूछा कि सच बताओ कि तुम अपने हाथ से अपना वीर्य नष्ट करते हो? वह मान गया। मैंने उससे कहा कि मूर्ख! तू मर जायेगा। यह जो तुम अपने प्रेम से गाते हो और लोग तुमको भक्त समझते हैं वह वास्तव में तुम्हारे वीर्य की कमी है। तुम्हारी मानसिक दशा खराब है। वह इस बात को मान गया। मैंने उसको बहुत कुछ हिदायत की। एक साल के बाद वह मुझे फिर मिला। मैंने पूछा कि बताओ अब तुम्हारी क्या दशा है? कहने लगा महाराज! इस पूरे वर्ष में केवल एक बार गिरा हूँ। मैंने कहा कि अब तुम बच जाओगे। यह मेरा इल्म है। हम उन दीवानों के पीछे फिरते हैं जो सिर मारते हैं।

एक गद्दी पति चोला छोड़ गया। उसके चेलों में से एक चेले ने सर मारना शुरु कर दिया। कहने लगा कि मुझमें धार आ गई है। एक डाक्टर को उसने अपना सहभेदी बनाया हुआ था। लोगों ने उस चेले को गद्दी पर बिठा दिया। कुछ समय बाद उस गुरु का जो इलाज करने वाला भी था मेरे

पास आया और बहुत से बातें करने लगा। मैंने उससे कहा कि मेरा इल्म कहता है कि तुम्हारे गुरु को जिरियान की बीमारी है। उसने मान लिया। आपको कैसे मालुम हुआ? मैंने कहा कि साइकोलोजी (मनोविज्ञान) जानता हूँ। मैं अपनी बावत जानता हूँ कि जब बचपन में मेरा ब्रह्मचर्य गिर गया तो मैं भी मस्ती में गाया करता था। दाता दयाल जी ने आज्ञा दी थी कि फकीर! चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल जाना। मैं शिक्षा को बदल रहा हूँ। जिनके भाग्य में है वह मेरी बात को समझ कर अपना जीवन बना लेंगे।

दाता दयाल के चोला छोड़ना के बाद भी कुबेरनाथ की चिट्ठियां मेरे पास आती रहीं। मैं उनका उत्तर देता रहा। श्री महेश्वर नाथ की भी चिट्ठियां आईं। उन्होंने लिखा कि सतलोक, अलख लोक और अनाम क्या है और मैं वहाँ कैसे जाऊँ? मैंने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। मैं उनको जानता भी नहीं था। फिर जब राधास्वामी धाम में गया तो कुबेरनाथ मेरे पास आये और कहा कि महाराज आपने मेरी चिट्ठियों का उत्तर तो दिया मगर महेश्वर नाथ को कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने कहा कि मैंने उनकी चिट्ठियाँ पढ़कर मुझे मेरे इल्म ने कहा कि उसको जिरियान का रोग है और वह रोगी है। वास्तव में मुझे आजमाने को कुबेरनाथ ने कहा कि उसने अपनी चिट्ठियों में बीमारी का तो कोई जिक्र किया ही न था। आपने कैसे जान लिया। मैंने कहा कि यह मेरा इल्म है। मैं मनोविज्ञान को जानता हूँ। उस समय कुबेरनाथ ने सिर नवाया और सत्गुरु स्वीकार किया। सहस्रदल कंवल से भंवर गुफा तक जितनी श्रेणियाँ हैं यह मनुष्य के मानसिक भाव और विचार के खेल हैं। इससे आगे सत, अलख, अगम या आत्मा और सुरत की चेतन अवस्थाओं के भाव बोध का खेल है। उससे परे स्वयं निज स्वरूप अकाल, अनाम है वह आधार है। जब तक कोई आदमी शारीरिक

मानसिक भाव को भूल नहीं सकता या छोड़ नहीं सकता, वह इस सतलोक, अलख और अगम में जा नहीं सकता। मेरे लिये यह तब कठिन था। यह तो आप सत्संगियों के द्वारा जो यह कहते है कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट होकर उनको अनेकों प्रकार से सहायता करता है, वह मैं नहीं होता। वह तो उनका अपना ही मन होता है। इसलिये मैं उस मन को छोड़ने के योग्य हुआ हूँ। मुझे यह समझ आ गई कि यह माया है और काल है। तब मैं ऊपर जा सका।

इसलिए यदि कोई अपने आदि घर वापिस जाना चाहता है तो वह अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को संभाले। संसार में जो कुछ हो रहा है, होता है या हो चुका है यह सब हमारे अपने ही कर्म का फल है। ऐसा समझ कर जिसको उदासी आ जाती है उसके लिये नाम है।

विषयन से जो होय उदासा।
परमारथ की जा मन आसा॥
धन संतान प्रीति नहिं जाके।
खोजत फिर साध गुरु जाके॥

जब तक यह दशा नहीं आती तब तक न किसी को शान्ति मिलती है और न सतलोक मिलता है। साथ ही जब तक यह ज्ञान नहीं होता कि भंवर गुफा अर्थात् सोहंग तक की श्रेणियाँ है। यह मन का खेल है और जब तब कोई इस खेल को छोड़ेगा नहीं, वह सतपद, जो केवल शब्द और प्रकाश का मंडल है, वहाँ तक जा नहीं सकता। अपने स्वरूप में वह मिल सकता है जो उस वस्तु में लय हो जाता है, जो हमारे अन्तर प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। वह जो वस्तु है वह हर एक मनुष्य का अपना ही निज स्वरूप है। वह अकह, अपार, अगाध, अनाम का अंश है।

इतना ऊँचा जो कोई चढ़े।

रूप रंग रेखा से टरे॥

गुरुओं ने लोगों को सच्चाई नहीं बताई। अपनी गद्दियों और अपने धनमान के लिये रोचक और भयानक बातें बनाकर लोगों को अपने पीछे लगाया। लोगों को 30-30 और 40-40 साल अभ्यास करते हो गये लेकिन किसी को कुछ नहीं मिला। किसी ने समझ लिया कि यह मेरी ही गलती है और इसी बात से शान्ति प्राप्त कर ली और कई ऐसे भी हैं जो गुरुओं को कोसते हैं।

असली और सच्चा गुरु तो तुम्हारे अन्तर रहता है? वह तुम्हारा अपना ही स्वरूप है। यदि तुम अपने जीवन पर दृष्टि डालो कि तुमने जीवन भर क्या किया है तब तुमको पता लगेगा कि असलियत क्या है। अब तुम सवाल करोगे कि फिर आदमी बाहर के गुरु की टेक छोड़ दे? सुनो! जिस आदमी का मन कमजोर है वह टेक छोड़ नहीं सकता। मन सहारा चाहता है और कमजोर आदमी को हर हालत में सहारा लेना पड़ेगा। इसलिये सहारा लो मगर अपने उस सहारे को पूर्ण मानो। जो आदमी गुरु को होशियारपुर में रहने वाला या डेरा व्यास का मालिक या रूहानी सत्संग देहली का आचार्य समझता है या गुरु के कार्य की ओर ध्यान देता है वह इष्ट पद पर नहीं पहुँच सकता। वह गुरु लोग जो काम करते हैं, किसी ने डेरा बनाया, किसी ने मानवता मन्दिर बनाया या मानवता केन्द्र बनाया यह इनके पिछले जन्म के कर्म थे। गुरु जो कहता है उस पर क्रियात्मक बनो। जब तक तुमको विश्वास नहीं है या तुम गुरु के काम में नुक्ता चीनी करते हो, तुमको कोई लाभ नहीं होगा। हमको जो कुछ मिलता है वह हमारी आस, विश्वास और कर्म का फल मिलता है। मैंने दाता दयाल जी से बड़ा प्रेम किया मगर यह विचार तक नहीं किया कि उनके

कितने बच्चे हैं। वह क्या करते हैं और उनके कौन-कौन रिश्तेदार हैं। उनके चोला छोड़ने के बाद एक बार राधास्वामी धाम गया लोगों ने मुझे बताया कि यह लड़की दाता दयाल की है। मैंने कहा कि सारी दुनिया ही उनकी लड़की है। तो उन्होंने कहा कि नहीं महाराज! यह उनकी लड़की है। फिर मैंने ध्यान से उस लड़की को देखा तो उसके चेहरे से मुझे दाता दयाल जी महाराज की समानता दिखाई दी। फिर मैंने उसे जो कुछ देना था दिया।

जो आदमी गुरु के रुप को नहीं समझता और अज्ञान की भक्ति करता है और आवेश में आ जाता है, यद्यपि उसके सांसारिक काम तो होते रहते है मगर अज्ञान की भक्ति अच्छी नहीं है। धनी हो जाना या निर्धन हो जाना, रोग होना या मर जाना यह सब अपने-अपने कर्म के अनुसार होता है। मेरे एक लड़का हुआ। वह मर गया। मैंने दाता दयाल को पत्र लिखा। उन्होंने उत्तर दिया कि यह कर्मानुसार खेल होता है। तुम चूंकि फकीर हो इसलिए मुझे तुम्हारे विचार के अनुसार बच्चे मरने का कोई अफसोस नहीं है। हाँ भागवती (मेरी पत्नी) के विचार से मुझे बहुत अफसोस है।

तुम लोगों के काम हो जाते हैं तो तुम समझते हो कि बाबा फकीर करता है। फकीर कुछ नहीं करता। तुम्हारा विश्वास करता है।

आस कर गुरु की दया की, हो निरास न तू कभी।

जो निरास हुआ समझ ले, गुरु का दास न तू कभी॥

देखो इसमें कैसा नुक्ता है। यदि तुम निराश हो गये तो तुम गुरु के दास नहीं हो। सब कुछ तुम्हारा विश्वास है।

जग के फन्दों में पड़ा, समझा नहीं उपदेश को।

तज के पृथ्वी को चढ़ा, प्यारे आकाश न तू कभी॥

गुरु की बड़ी महिमा है मगर मैं उस तरह नहीं समझता जिस तरह दुनिया समझती है। दुनिया तो यह समझती है कि गुरु फूंक मार देगा मगर गुरु फूंक नहीं मार सकता। यह सब तुम्हारा अपना ही विश्वास है। दाता दयाल जी के जो पत्र बसरा /बगदाद में मिला करते थे, मैं वह कागज भी खा जाया करता था। उनके दरबार में प्रेम के भाव में आकर अपने अन्तर से निकले शब्द गाया करता था। उस समय मेरी आँख बन्द होती थी। मेरा वह विश्वास अन्तरीय था। यदि तुम मेरी नकल करोगे तो तुमको लाभ नहीं होगा। क्योंकि यह तो कुदरती भाव है। नकल करने से कुछ नहीं मिलता। यह तो जिसके भाग्य में होता है उसको मिलता है। धन्ना भक्त को पत्थर से मिल गया लेकिन आज आदमी जो पत्थर की मूर्त्ति पूजते हैं उनको क्यों नहीं मिलता और उनके काम क्यों नहीं होते। यह सब आदमी के विश्वास पर निर्भर है मगर विश्वास करना भी अपने बस की बात नहीं है।

जिस पर दया आदि कर्त्ता की, वह यह न्यामत पावे।

आज गुरुमत का जोर तो हो गया लेकिन किसी ने सच्चाई वर्णन नहीं की। इसलिए लोग निराश हो गये। ऐसे-ऐसे पत्र लिख देते हैं जैसा इस आदमी ने लिखा है। यह भाव जो सबके अन्दर होता है मगर कोई बताता नहीं। जो बाहरी बातों को देखकर ही विश्वास कर लेते हैं उनका विश्वास तो आज भी टूटेगा और कल भी टूटेगा। इससिए मैंने शिक्षा को बदल दिया कि सच्चाई को समझो और सिद्धान्त पर चलो। अन्यथा तुम इष्ट पद पर पहुँच जाओगे।

माया छाया एक है, दोनों में सार की गम कहां।

यह समझ आ जाय होगा, फिर उदास न तू कभी॥

गुरु की दया पर विश्वास रखो। गुरु की दया क्या है? गुरु समझ

देता है और माया और छाया का पता देता है। मुझे यह समझ नहीं आती थी और एक अज्ञानी भक्त था। माया है हमारी आस जो हमारे अन्तर से निकलती है। उसका जो फल मिलता है वह है छाया। अब दाता दयाल का चोला तो है नहीं, जो उनके एहसान के बदले उनकी सेवा करूँ। असली दाता दयाल मेरे अन्तर में है। बाहर में सत्संगी लोग मेरे सत्गुरु हैं। अब मैं भीलवाड़ा गया था। क्यों? एक तो मेरे अन्तर मेरे सत्गुरु स्वरूप सत्संगियों की सेवा का अन्तरी भाव है, इसीलिये वहाँ जाकर एक तो कृषक जी, दयाल दास को मत्था टेका, दूसरे उनको यह समझाने के लिये कि कहीं मान और बड़ाई में मत फंस जाना और अपने जीवन को बर्बाद मत कर लेना क्योंकि आजकल के गुरु गलत मान लेते हैं। तीसरे कर्म का चक्र भी है। जिससे लेना है उससे ले लेना है और जिसको देना है उसको हर हालत में दे देना है।

जो लोग दुनिया के चक्कर में हैं, उनके अज्ञान का नाश नहीं होता, क्योंकि उनको तो दुनिया चाहिये। उनके लिये अज्ञान आवश्यक है। वह ऐसा ही विश्वास रखें। उनको दुनिया मिलेगी। सांसारिक इच्छा रखने वाले के लिये अज्ञान आवश्यक है। जो अपने घर जाना चाहते हैं उनके लिये ज्ञान है। ज्ञान सबके लिये नहीं है। जो एक का सहारा पकड़ता है वह सफल हो जाता है। जो आज राम को पूजता है, और कल कृष्ण को। कभी देवी देवता को पूजता है कभी गुरु को पूजता है; चूंकि उनको कहीं भी विश्वास नहीं है अत: वह असफल रहता है। वह मालिक तो सब में है मगर जीव का विश्वास नहीं है।

कैसे अपने रूप की, आती समझ प्यारे तुझे।

आया बरस में पक्ष मास में, गुरु के पास न तू कभी॥

तुम तो गुरु के पास आते ही नहीं हो तो तुमको असलियत का पता

कैसे लगे। लोग मुझ पर विश्वास करते हैं। उनके विश्वास के कारण उनके काम होते रहते हैं लेकिन लोग यह समझते हैं कि बाबा जी हमारे काम करते हैं। इसलिये उनके अज्ञान को मिटाने को मैंने सच्चाई वर्णन कर दी।

नाम से मिटते हैं संकट, नाम गुरु का मंत्र है।

नाम से काटा है माया, जाल फांस न तू कभी॥

फिर नाम क्या है? नाम गुरु का मंत्र है राय, उपदेश और सम्मति है, जो तुम्हारी प्रकृति के अनुसार तुमको गुरु बताता है। तुम्हारे लिये वही नाम है। जब तक कोई गुरु के उपदेश पर चलता नहीं है, उसको कुछ मिलता नहीं, चाहे वह कितना ही नाम क्यों न जपे।

अब संभल जा नाम में, विश्राम आठों याम ले।

किया राधास्वामी नाम से, दुख का नाश तू कभी॥

दुख का नाश न सुमिरन से होगा और न ध्यान से होगा। हां विशेष दशा में कोई कष्ट दूर हो जायेगा किन्तु अपने कर्म के चक्र का सामना विचार से और साहस से करना चाहिये। तुमने सहारा लेना है चाहे प्रेम से लो, चाहे विश्वास से लो। चाहे सुमिरन ध्यान से लो चाहे अनुभव और ज्ञान से लो। मन को सहारा देना है। मैं अभी तक दाता दयाल जी के रूप का सहारा लेता हूं।

साधारणतया लोगों में यह ख्याल पाया जाता है कि गुरु महाराज फूंक मारकर हालत को बदल देते हैं। कभी मेरी भी यही दशा थी किन्तु आदमी का विश्वास काम करता है। बम्बई निवासी एक आदमी मि. आजाद रसूल है। उसमें हर तरह के अवगुण थे। मैं उसको जानता नहीं था। मैं बम्बई गया। वह भी मेरे सत्संग में आया होगा। पिछले वर्ष वह होशियारपुर मेरे पास आया। तब उसने बताया कि बाबा जी! कोई ऐसा

अवगुण नहीं था जो मुझमें न हो? आप बम्बई गये। मैंने वहाँ आपके दर्शन किये और आपका सत्संग सुना। अब आपकी दया से मेरे अवगुण जाते रहे। अब मैं प्रतिदिन दो रुपये के फूल आपके फोटो पर चढ़ाता हूँ। अब वह यहाँ भी हर महीने डेढ़ सौ रुपये भेजता है।

उसके अवगुण किसने छुड़ाये। मैंने तो कुछ नहीं किया। मैं इस निष्कर्ष पर आया हूँ कि जब किसी काम का समय आ जाता है तो कुदरत स्वयं उसके लिए कोई प्रबन्ध कर देती है। यदि मैं किसी के अवगुण दूर कर सकता होता तो मैं सबके अवगुण दूर कर देता।

ऐ मालिक! बचपन से तेरी खोज थी। तुझको और तेरी लीला को जानने की लालसा थी। अन्त में समझ आई कि तेरी लीला का कोई अन्त नहीं और कोई जान नहीं सकता है। अब किस बात पर ठहरा हूँ? शरणा गतम्।

तेरी लाली कौन जाने, तू तो अपरम्पार है।

एक दृष्टि से तेरी, दुखियों का बेड़ा पार है॥

वह मालिक एक शक्ति है। उसी से ही सब कुछ होता है। पिछले जन्मों के अनुसार यश मिलना था, वह मिल गया किन्तु मैंने उसका अनुचित लाभ नहीं उठाया।

प्रवचन

परमसन्त

हज़ूर परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर, 4.11.73

न काशी न काबा न कैलाश में है।

तू देख अपने घट में तेरे पास में है॥

तेरे घट के भीतर वह मालिक बसा है।

न मन्दिर न मसजिद न आकाश में है॥

नहीं खाली उससे यह सारा जहाँ है।

कहाँ देखता किसकी तालाश में है॥

लगा बन्द तीनों सुरत को चढ़ाओ।

अनहद की धुन घट के आकाश में है॥

गंगा के जल से नहीं होगी तृप्ति।

चलो घाट मन के जो तू प्यास में है॥

वह व्यापक हो रग रगमें आके समाया।

तेरी जान तन में तेरे पास में है॥

भरम मैं पड़ा तू किधर ढूंढता है।

गुरु तेरे अन्तर वह प्रकाश में है॥

कहीं नाम है और कहीं बेनिशां है।

हमारे ही मन के वह विश्वास में है॥

राधास्वामी ने भेद अपना बताया।

उसे मिलने को युक्ति अभ्यास में है॥

हंसा हो मोती बरन नहीं चीनां॥

पहर गूदड़ी भेष रमाये, जोर ते सन्त कहाये।

भेष लिये पर भेद न जाने, घर घर टुकड़ा खाये॥

हाथ कमण्डल गले मृगछाला, नगर फिरें जैसा भैंसा।

खलरा ऊपर राख रमाये, मन जैसे का तैसा॥

तीरथ बरत में बहुत भरमना, बैल चले जैसे घानी।

काया में करतार बसत हैं, ताका भरम न जानी॥

पंछी के घोर मीन के मारग, अनुरागी लौलीना।

कहें कबीर सुन भरथरी जोगी, यह मारग है झीना॥

मैंने यह शब्द सुने। ऊपर के शब्द में लिखा है कि प्रकाश को देखो और शब्द को सुनो। साधन अभ्यास करो। यही मैं कहता हूँ। मैं प्रकाश देखता हूँ और सुनता हूँ। अपने आप से पूछता हूँ कि उससे तुमको क्या मिला?

शुरु शुरु में मैं ब्राह्मण होने के नाते से ईश्वर और परमेश्वर को मानने वाला था। रामायण के संस्कार के अनुसार कि वह राम किसी न किसी रूप में संसार में आया करता है, मैं उसको मानव रूप में देखना चाहता था। मेरी तड़प या मौज मुझे, दातादयाल महर्षि शिवव्रतलालजी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे राधास्वामी मत, कबीर मत या संत मत की शिक्षा दी। इसमें सबका खंडन था कि कोई ऋषि, महात्मा तथा कोई धर्म पंथ वहाँ नहीं पहुँचा। केवल संत मत ही पहुँचा है। अपने पूर्वजों के बारे में यह पढ़कर चित्त को ठेस लगी। चूंकि महर्षिजी को मैं राम का अवतार समझता था, इसलिये उनसे मेरा विश्वास नहीं टूटता था और बाणी को झूठ कहने का साहस भी नहीं होता था। तब मैंने प्रण किया था कि सच्चा होकर इस मार्ग पर चलूंगा और जो अनुभव होगा संसार को बता जाऊँगा।

मैंने प्रकाश देखे और सुने मगर शान्ति नहीं मिली। आनन्द बहुत लिया और प्रेम बड़ा किया। फिर शान्ति कब मिली? जब आप लोगों से मुझे ज्ञात हुआ कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रगट होकर अनेक प्रकार से आपकी सहायता करता है, चूंकि मैं नहीं होता और न मुझे कोई पता होता है, तो मुझे निश्चय हो गया कि इन्सान के अन्तर में जितने रूप रंग, भाव विचार पैदा होते हैं यह संस्कार हैं और केवल प्रतिबिम्ब हैं नहीं, मगर भासते हैं। इससे मुझे समझ आई है कि—

न काशी न काबा न कैलाश में है।

तू देख अपने घट में तेरे पास में है॥

इन अनुभवों ने मुझे यह मानने को विवश कर दिया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न कोई और ही किसी के अन्तर जाता है। फिर कौन जाता है? मनुष्य का अपना विश्वास। यदि मनुष्य किसी एक जगह पर पूर्ण रूप से विश्वास रख ले तो वह अवश्य फल लायेगा। यह शिक्षा जो मैं देता हूँ यह कही तो सबने ही, मगर कही ऐसे ढंग से कि किसी की समझ में कुछ न आया। मेरी तरह स्पष्ट रूप से और समझा करके नहीं कहा। क्यों नहीं कहा? यह तो उनको पता होगा लेकिन मैं यह समझता हूँ कि स्पष्ट कहने से न मान आदर मिलता है न मण्डल बनता है और न पैसा मिलता है। अब मुझे कौन देता है, सिवाय थोड़े से आदमियों के। जिनको असली बात की समझ आ गई है, वह मेरी सहायता करते हैं। इसलिये यह महात्मा यद्यपि रहस्य को जानते हैं लेकिन पब्लिक को बताते नहीं। यदि बतावें तो उनके डेरे नहीं चलते। एक तो यह बात है। दूसरी यह कि जीवों को असलियत को जानने की और अपने घर जाने की आवश्यकता नहीं है। वह तो सांसारिक पदार्थों के पीछे फिरते हैं। यदि उनको असली और सच्ची बात बता दी जाय तो उनका उत्साह, सहारा और विश्वास टूट जाता है। इसलिये शायद उन्होंने सच्चाई वर्णन न की हो। लेकिन मेरे जिम्मे गुरु की आज्ञा है कि चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा बदल जाना, इसलिये जो मेरी समझ में आया, वह कहा। अच्छा किया या बुरा किया, इसका मुझे पता नहीं।

यदि तुम लोग संसार की वस्तुयें भी चाहते हो तो वह भी तुमको तुम्हारे विश्वास से ही मिलेंगी। इसलिये विश्वास का होना आवश्यक है। एक बीमार स्त्री रोहतक से आई हुई है। 4 वर्ष से बीमार है। अब मेरे पास

आ गई। कहती है कि बाबा जी आपको गुरु मानकर आई हूँ या तो मुझे स्वस्थ कर दो या मार दो। चूंकि इसका मुझ पर विश्वास है और मेरे कहने के अनुसार वैद्य की या डाक्टर की दवा खा रही है, अब इसे काफी आराम है। तो उसको राजी कौन करेगा? क्या मैं करूँगा? नहीं, इसका विश्वास करेगा। मैं तो बीमारी की दशा में स्वयं डाक्टरों के पास जाता हूँ। यदि मैं निरोग करने वाला होता तो अपने रोग को ठीक कर लेता। मैं हमेशा यह सोचा करता हूँ कि फकीर! यदि अपने मान सम्मान और धन या मन्दिर को पैसे के लिये किसी से पर्दा रखोगे तो तुम कहाँ जाओगे? कर्म का चक्र किसी को क्षमा नहीं करता, चाहे वह साधू हो, महात्मा हो, संत हो या परमसंत हो। इसलिये मैं डरता हूँ। यदि तुम मुझे ज्ञानदाता समझकर मेरी सेवा करते हो तो मैं लेने को तैयार हूँ। जो कुछ हमको मिलता है यह हमारे ही कर्म का फल मिलता है, चाहे वह प्रारब्ध कर्म हो या इस जन्म का हो।

कर्म क्या है? हमारी वासना। इसलिये मैं हमेशा कहता रहता हूँ कि अपनी वासना को ठीक रखो। यदि तुम अपने स्वार्थ के लिये किसी को बदनाम करते हो या किसी को धोखा देते हो तो तुम कर्म के चक्र या फल से नहीं बच सकते हो। चाहे तुम बाबा फकीर के पास चले जाओ या रामचन्द्र जी या कृष्ण जी के पास जाओ। कर्म के चक्र से तुमको कोई बचा नहीं सकता। स्वामी जी ने अपनी बाणी में लिखा है-

कर्म जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना।

इसलिये तुम अपने मन में सबके लिये प्रेम रखो। किसी से घृणा

मत करो। किसी से झगड़ा मत करो मगर यह संसार है और हम इस संसार में रहते हैं। तुमको क्रियात्मक (अमली) ढंग बताता हूँ कि एक आदमी तो प्रेम करता है मगर दूसरा घृणा करता है, उसको अकारण दबाता है। आदमी शराबी है किन्तु स्त्री नेक है। वह उसके साथ अकारण दुर्व्यवहार करता है। घर में माँ, बाप, भाई, स्त्री और बेटे सब एक दूसरे के विरुद्ध हैं, तो हम कैसे सुखी रह सकते हैं। एक आदमी है। विवाह होता है। बाल-बच्चे पैदा होते हैं, माँ-बाप चाहते हैं कि अपनी कमाई हमको दे। भाई भी यही चाहते हैं। स्त्री की दृष्टि भी उसकी कमाई पर है। राज्य भी टैक्स मांगता है। बाबा फकीर भी भेंट चाहता है, तो बताओ वह बेचारा कहाँ जाये?

मैं तो अपने आप को 85 प्रतिशत बचा गया। यहाँ जितने आदमी मेरे पास आते हैं सब घर के झगड़ों के कारण आते हैं। बिहारीलाल पाठक को इसके लड़कों ने मारा और सड़क पर घसीटा। चन्दन दास की चिट्ठी आई। वह लिखता है कि मेरी स्त्री और लड़कों ने मुझे धक्के दिये। सब दुनिया दुखी है। मैं चन्दनदास को अपने पास बुला लेता मगर इतना पैसा कहां से लाऊँगा। मैं इस समस्या को हल नहीं कर सका।

घर घर देखा एक ही लेखा। क्या पंडित क्या काजी शेखा॥

मैं यह समझता हूँ कि यदि भाई-भाई की या बाप-बेटे की नहीं बनती तो अलग हो जायें। मन में हर समय कुढ़ते रहने से अलग हो जाना अच्छा है। दूसरे कोशिश करो कि कोई आदमी दूसरे का बोझ न बने। अपनी कमाई आप करो। मैंने बाप की कमाई नहीं खाई, भाई की कमाई

नहीं खाई। तो सुखी रहने का तरीका यह है कि सबसे पहले अपने पाँव पर खड़े होने की कोशिश करो। जो बूढ़े कमाई कर सकते हैं लेकिन कमाते नहीं, कर्त्तव्य है कि उसको रोटी कपड़ा दें। बीमारी की दशा में उसका इलाज कराये और उसे खुश रखने की कोशिश करें। इसके अलावा यदि वह कुछ और आशा रखता है तो वह अपराधी है। जो लड़के बूढ़े माँ-बाप की सेवा नहीं करते वह भी अपराधी हैं। यह है शिक्षा जिसको मैं बदल रहा हूँ। कोई अमल करे या न करे इसका ठेकेदार नहीं।

गुरु अधिक अच्छी तरह जानता है की भलाई किस बात में है। मुझे वेतन मिलता था और मेरा प्रोवीडेन्ट फन्ड भी कटता था। उस समय पाइयां जो एक पैसे की तीन होती थी, प्रोविडेन्ट फन्ड कटने के बाद मुझे वेतन के साथ या एक दो पाइयां मिलती थीं। वह पाइयां मैं अपनी स्त्री को दिया करता था और कुल वेतन अपने पिता को देता था। बसरा बगदाद में मुझे काफी वेतन मिलता था। मैंने कुल रुपया अपने पिता को दिया।

मैं छुट्टी लेकर दाता दयाल के पास लाहौर गया। उन्होंने कहा कि फकीर! अब तो तुम अमीर बन गये होंगे। मैंने कहा हुजूर की दया है। उन्होंने कहा कि रुपया क्या करते हो? मैंने बड़े गर्व से कहा कि महाराज! अपने बाप को देता हूँ। क्यों देते हो? मैंने कहा कि हुजूर! उन्होंने मुझे पाला है। उन्होंने कहा कि तुम भी उनको पालो। सारा रुपया क्यों देते हो? क्या तेरे बाप ने भी कभी अपनी सारी कमाई तुझ पर खर्च की? मैंने कहा- 'नहीं'। लेकिन घर में मेरी माँ है, भाई है, उनको भी तो खर्च चाहिये। कहने लगे कि बेवकूफ! तुम्हारे भी तो सन्तान होगी। इसलिये

उनको खर्च की जितनी उचित आवश्यकता हो उतना रुपया दो।

मैं घर गया और पिता से कहा कि मैं अब आपको अस्सी रुपये मासिक दूंगा। यह आपके घर के लिये पर्याप्त है। वह नाराज हो गये। मैंने कहा कुछ भी कहो मगर गुरु की जो आज्ञा है मैं तो वह करूँगा। मेरे पिता ने लोगों को दस हजार रुपया कर्ज दिया हुआ था, वह सब का सब मारा गया। मैं तुम लोगों को आत्मज्ञान की शिक्षा नहीं देता क्योंकि दुनिया को इसकी आवश्यकता नहीं है। दुनिया को तो दुनिया में सुखी रहने की आश्यकता है। लोग मेरे पास आते हैं। कोई कहता है कि लड़की की शादी नहीं होती। मैं उससे कहा करता हूँ कि क्या तूने मुझे पूछकर सन्तान पैदा की थी। सन्तान के विचार से तो कोई सन्तान पैदा नहीं करता। किसी का लड़का चोर बन गया। किसी का दुराचारी हो गया। किसी को जुआ खेलने की आदत पड़ गई। कोई शराबी है। अत: सन्तान को सन्तान की दृष्टि से पैदा करो अन्यथा मत करो। तुम्हारे मन में बड़ी शक्ति है। जैसा ख्याल वैसा हाल। जैसा विचार करोगे वैसा ही जीवन बनेगा। तो मालिक कहां रहता है?

न काशी न काबा न कैलाश में है।

तू देख अपने घट में तेरे पास में है॥

मुझे समझ नहीं आती थी कि दाता दयाल जी महाराज कैसे मेरे पास हैं? मैं तो उनको लाहौर में या राधास्वामी धाम में समझता था। यह समझ देने के लिये उन्होंने मुझे गुरु पदवी दी थी क्योंकि मैं सच्चाई पसन्द मनुष्य था और देखना चाहता था कि स्वामी जी के पास क्या हक था जो

उन्होंने सबको काल और माया में बताया। मेरे पास प्रतिदिन चिट्ठियां आती हैं। लोग लिखते हैं कि बाबा जी! आप हमारे अन्तर जाग्रत में या स्वप्न में या अभ्यास में आये और हमारा यह काम किया। लेकिन मैं तो होता नहीं तो फिर वह गुरु कौन है जो तुम्हारे अन्तर में रहता है। यह तुम्हारा अपना मन है। तुम्हारा अपना ही मन है, तुम्हारी अपनी ही आत्मा है और तुम्हारी अपनी ही सुरत है। तुम भूल में हो। दाता दयाल जी ने एक सत्संगी मेलाराम को लिखा था–

घट में दर्शन पाओगे, सन्देह इसमें कुछ नहीं।

मैं तो घट में हूं तुम्हारे, ढूंढ़ लो मुझको वहीं॥

शब्द सुनते हो मेरा, अन्तर में चित को साधकर।

सुरत मेरा रूप है, इसको समझ लेना यहीं॥

तुम्हारी सुरत ही सच्चा सतगुरु है। कोई महात्मा सच्ची बात नहीं बताता। तुमको भूल में रखा गया है। आप देखो की यह गुरु लोग कहते हैं कि नाम ले लो। तुम्हारे अन्त समय गुरु आके ले जायेगा। इसी एक ख्याल से लाखों सत्संगी बन गये लेकिन मेरा अनुभव इसके विरुद्ध है। मरते समय कई आदमी कहते हैं कि बाबा आया, पालकी लाया या हवाई जहाज लाया और प्राण त्याग दिये लेकिन मैं तो गया नहीं और न मुझे किसी की मृत्यु का पता होता है। फिर मुझे ख्याल आता है कि यदि कर्म का कानून ठीक है तो जिन महात्माओं ने बात को पर्दे में रखा, अपना झूठा प्रोपेगंडा करवाया और लोगों को अज्ञान में रखकर उनसे पैसा लिया, वह कहाँ गये होंगे और उनके जीवन का क्या परिणाम हुआ होगा? बाबा

फकीर गुरु नहीं है। बाबा फकीर ने तो तुमको असली और सच्चे गुरु का पता बताना है। जी चाहे मेरे सत्संग में आओ या न आओ। यदि यह समझते हो कि मेरे इन विचारों से किसी को लाभ पहुँच सकता है तो मन्दिर में चार पैसे दो अन्यथा मत दो।

तुमको असली और सच्चे गुरु को जानने पहिचानने और मिलने के लिये क्या करना चाहिये?

हंसा हो मोती वरन नहीं चीना।

पहर गूदड़ी भेष रमाये, जोर ते सन्त कहाये।

आज कल जोर से सन्त बनते हैं। कैसे? यदि मेरे पास काफी पैसा हो और मैं दुखियों, गरीबों और बीमारों की सेवा और सहायता कर सकता हूँ तो लोग मेरे नाम का ढिंढोरा पिटने लग जाते हैं और मुझे बड़ा भारी सन्त कहेंगे। यह है जोर सन्त बनना। आजकल क्या हो रहा है? गद्दी का तो मैं नाम हीं लेना चाहता। जो आदमी नाम दिलाने के लिये लोगों को उनके पास ले जाते हैं उनको पाँच रुपया प्रति चेला दिये जाते हैं। इसको कहते हैं जोर से सन्त बनना। आजकल लोग घर से किसी कारण भागकर भगवें कपड़े पहन लेते हैं और सन्त कहलाते हैं। लोगों को डराते धमकाते हैं कि तुमको श्राप दे दूंगा। इसका नाम है जोर से संत बनना।

भेष लिये पर भेद न जाने, घर घर टुकड़ा खाये।

मैं भी तो बाहर जाता हूँ। लोग मुझे खाना खिलाते हैं। यह भी तो घर घर टुकड़ा खाना है।

हाथ कमण्डल गल मृगछाला, नगर फिरें जैसे भैंसा।

खलरा ऊपर राख रमाये, मन जैसे का तैसा॥

आजकल के भेषधारी साधु क्या करते हैं? हाथ में कमण्डल होता है, गले में मृगछाला होती है। शरीर पर राख मली हुई होती है। बाहरी स्वांग तो बना लिया मगर मन वैसे का वैसा ही है। मन में कोई परिवर्तन नहीं आया। गाँव गाँव फिरते हैं और लोगों को डराते हैं। यह है आजकल के साधुओं की दशा। दातादयाल जी कहते हैं–

भरम में पड़ा तू किधर ढूंढता है,

गुरु तेरे अन्तर वह प्रकाश में है।

मैंने आप लोगों को बताया है कि असली गुरु तुम्हारा मन है और सत्गुरु तुम्हारी सुरत है।

मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संजोग।

मन ही का व्यौहार जगत में, नाहीं जानें लोग॥

तुम लोग बाबा फकीर को गुरु मानकर उसकी पूजा करते हो लेकिन जो कुछ वह कहता है उसको सुनते नहीं हो। तो क्या तुम भ्रम में नहीं हो। मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं लेकिन तुम लोग यह समझते हो कि हमारे अन्तर बाबा आता है। देवी देवता, राम, कृष्ण या गुरु जो भी तुम्हारे अंतर प्रगट होता है वह तुम्हारे अपने विश्वास का रूप है। तुम्हारे ही विश्वास का फल तुमको मिलेगा। इसलिये अपने अन्तर प्रकाश को पकड़ो।

वह व्यापक हो रग रग में आके समाया।

तेरी जान तन में तेरे स्वाँस में है॥

हमारे अन्तर में क्या कुछ है? रक्त है, मन है, आत्मा है और सुरत है। बाहर से कोई गुरु नहीं आता। यह बिल्कुल सच्चाई है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता।

कहीं नाम है और कहीं बेनिशां है,

हमारे ही मन के विश्वास में है।

हमारे अन्तर में क्या कुछ है? रक्त है, मन है, आत्मा है और सुरत है। बाहर से कोई गुरु नहीं आता। यह बिल्कुल सच्चाई है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता।

कहीं नाम है और कहीं बेनिशां हैं,

हमारे ही मन के विश्वास में हैं।

वह तुम्हारे ही मन का विश्वास है। दातादयाल जी के शब्दों में कोई धोखा नहीं है। वह सत्संग से सैन बैन (संकेत) से काम लेते थे लेकिन मैं समझ नहीं सकता था। अब अनुभव के बाद समझ में आई है। चूंकि सैन बैन या इशारों को दुनिया समझने के योग्य नहीं है इसलिये मैंने सैन बैन को छोड़ दिया और यथार्थ रूप से बात नहीं सुनते। कोई डंडे मार आयेगा और तुमको समझायेगा। वह मैं हूँ।

अभ्यास के समय तुम्हारे अन्तर रूप रंग, भाव–विचार क्यों आते हैं। तुम्हारे मस्तिष्क पर जो संस्कार पड़े हुये होते हैं या उनकी जो फिल्म बनी होती है वही फिल्म साधन अभ्यास या स्वप्न में हमारे सामने आती है। उनके दृश्यों को सत मानकर हम उनमें फँस जाते हैं और हम प्रकाश

की ओर नहीं जाते इसलिए आरम्भ या शुरु की अवस्था में सबसे पहले अपने अन्तर गुरु का प्रेम पैदा करो और उसकी फिल्म अपने अन्तर बनाओ ताकि बजाय दूसरी फिल्म के यह फिल्म तुम्हारे सामने आये। दाता दयाल जी कहा करते थे कि जिस पर तुम्हारा विश्वास है या जहाँ तुम्हारा प्रेम है, उसका ध्यान धरो ताकि उसकी फिल्म तुम्हारे अन्तर बने। इससे दूसरी फिल्म दब जायेगी। फिर रूप आयेगा। फिर प्रकाश आयेगा। जब प्रकाश आ जाता है तब रूप की आवश्यकता नहीं रहती। लेकिन मैं जब नीचे आता हूँ तो दातादयाल जी का ध्यान करता हूँ क्योंकि उनसे अगाध प्रेम था। यदि चौरासी के चक्र से बचना चाहते हो तो प्रकाश और शब्द का साधन करो। यदि अपनी दुनिया बनाना चाहते हो तो अपने विचार को ठीक करो और अपनी नीयत को शुद्ध करो। यह संसार तो दुखों की खान है। संसार में जीना बड़ा कठिन है। मैं घर में रहता था। मेरा छोटा भाई भी घर में रहता था। मैंने सोचा कि यदि मैं यहाँ रहूँगा तो झगड़ा होता रहेगा। अत: मैंने अपना घर होशियारपुर में बना लिया। इसलिये जहां तक हो सके झगड़ों से बचकर रहो। झगड़ों और मुकदमों पर व्यर्थ पैसा व्यय होता है। आज कल इस मँहगाई के कारण पेट भरना भी कठिन हो रहा है।

मैं नौकरी पर था और मेरे बूढ़े पिता जी गांव में रहते थे। अपनी बिरादरी वाले उनको व्यर्थ तंग करते थे। उन्होंने मुझे चिट्ठी लिखी। मैंने दाता दयाल जी को चिट्ठी लिखी तो उन्होंने लिखा:-

कोई दुख सुख का नहीं दाता, तेरी है भूल सब।

कर्म अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब॥

कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझको समझ।

कर्म से आनन्द है और कर्म ही से सूल सब॥

इसी शब्द में आगे लिखते हैं:-

किस भरम में तू पड़ा, औरों की बातें छोड़ दें।

काम में लग अपने करले, कर्म निज अनुकूल सब॥

राधास्वामी नाम भज, झगड़ों से बचकर रह सदा।

जो नहीं समझा तो, पढ़ना लिखना है धूल सब॥

आप लोग गृहस्थी हैं। जहां तक हो सके घरों में झगड़ा मत करो। सुनो:-

हार चले सो संत है, और जीत चले सो नीच।

हम गृहस्थी लोग थोड़ी थोड़ी बात पर घरों में झगड़ा कर देते हैं और फिर दुखी होते हैं। मेरा एक पड़ौसी व्यर्थ झगड़ा किया करता था। मैंने उसे प्रेम से उत्तर दिया। उससे प्रेम किया। परिणाम यह हुआ कि वह मुझ पर जान देने को तैयार है। यह गृहस्थ में जीने का ढंग है। रामराम कहने ने तुम्हारे गृहस्थ को ठीक नहीं करना और न रामराम कहने मात्र से तुम पार जा सकते हो। गुरु ज्ञान तुम्हारी सहायता करेगा।

मेरी ड्यूटी है निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता करना। मैं फूंक मारकर तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। ठीक राय देता हूँ। झगड़ों से बचो और अपनी जुबान को काबू में रखो। नहले पर दहला मत

मारो। आजकल संतान अधिकतर बूढ़ों की सेवा नहीं करती। क्यों? इन बूढ़ों को भी जीना नहीं आता। यह सन्तान पर हुकूमत करना चाहते हैं। आजकल कौन सहन करता है। इनको सेवा करानी नहीं आती। सन्तान को प्रेम से बुलाओ। वह भी तुम्हारा आदर करेंगे। क्या लेना है तुमको हुकूमत करके? मैं सन् 1936 ई. के बाद एक बार धाम गया तो वहाँ श्री हरीस्वरूप गुप्ता का पिता मुझे मिला। उसकी दृष्टि कमजोर थी और बुढ़ापा था। रोने लग गया कि महाराज! अब दाता दयाल जी तो चोला छोड़ गये। अब किससे फरियाद करें। घर वाले सेवा नहीं करते। दुखी हूँ। यदि किसी गद्दी वाले के पास जाता हूँ तो वह कहते हैं कि नये सिरे से नाम लो। मैंने कहा कि कुछ दिन मेरे साथ रहो। सत्संग से धर्म का भ्रम तो मैंने दूर कर दिया। उससे मैंने कहा कि मेरी एक बात मानो और उस पर चलो। फिर यदि तुमको कोई शिकायत घर वालों से हो तो मैं जिम्मेदार हूँ। मैंने उससे कहा कि यह बात स्वप्न में भी मत सोचो कि तुम्हारा परिवार बुरा है। यदि घर में तुमको सूखी रोटी भी मिले तो तुम बाहर लोगों से कहो कि मुझे पराँठे मिलते हैं किंतु कहो सच्चे दिल से। मन में कपट रखकर नहीं। अपनी बहू और अपने पोते पोतियों से प्रेम का व्यवहार करो। कई वर्ष के बाद फिर देहली गया तो वह फिर मेरे पास आया। उसने बताया कि महाराज! आप की नसीहत पर चलने से मैं सुखी हो गया। घरवाले प्रेम से मेरी सेवा करते हैं और मैं बहुत खुश हूँ।

अब समय बदल गया है। समय के साथ जो अपने आप को नहीं बदलता वह दुख उठाता है। मुझे अपने लड़के से कभी कोई शिकायत का अवसर नहीं मिला। मैंने उससे कह रखा है कि अपनी स्त्री की इच्छा

अनुसार मुझे भेजो यद्यपि मेरी बहू मेरे लड़के से भी अधिक मेरी सेवा करती है। यह तुम को जीने का रहस्य बता रहा हूँ। फिर यदि कोई दुख आ भी जाये तो उस को अपना कर्म समझो और खुशी से भोगो। यदि किसी से घृणा करोगे तो उसके फल से तुम बच नहीं सकते। मेरे एक मित्र अपनी स्त्री से घृणा किया करते थे। अब उनकी स्त्री पागल हो गई है। इस कारण वह दुख उठा रहा है। शास्त्र कहते हैं कि घृणा का फल दुख और अशान्ति है। उसका उपाय है किसी निर्बन्ध पुरुष का सत्संग। सत्संग से विवेक और समझ लो।

बिन सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

तुम लोगों को सांसारिक सुख चाहिये। मालिक की तो तुमको आवश्यकता नहीं है। जो निवृत्ति मार्ग चाहते हैं उनको प्रकाश और शब्द का साधन है। सबसे पहिले घरों में शान्ति रखो। इस कान सुनो और उस कान निकाल दो। तब तुम सुखी रह सकते हो। यह है सत्संग। ज्ञान की गंगा बह रही है इसमें नहा लो। यदि नहीं नहा सकते तो कम से कम छीटें ही ले जाओ। यदि छींटे भी नहीं ले सकते तो गंगा के किनारे ही बैठ जाओ और कुछ नहीं तो तुमको ठंडक तो अवश्य मिलेगी।

दाता दयाल जी महाराज कहा करते थे कि गंगा बह रही है कुछ ले जाओ। उस समय मैं सोचा करता था कि यह क्या देते हैं। अब समझ आई। इसलिये कहता हूँ कि ज्ञान ले जाओ ताकि तुम्हारा गृहस्थ का जीवन सुखी हो जाय। यदि मैं आध्यात्मिक बात करूँ तो वह तो तुम समझ नहीं सकते इसलिए ज्ञान देता हूँ। सुनो! जो मेरा तेरा अधिक करता

है, वह दुखी होता है। मेरी स्त्री में तेर अधिक थी। मैं उससे कहा करता था कि तेरी यह आदत दुख का कारण बनेगी। अन्तिम आयु में वह छः सात वर्ष बीमार रही। हमारे शरीर का स्वास्थ्य हमारे विचारों पर निर्भर है। जिसके जितने अच्छे विचार होंगे वह उतना ही अधिक प्रसन्न रहेगा। बीमारी का सम्बन्ध विचारों के साथ है। मुझे पेशाब का रोग क्यों है? इसका कारण मेरा बचपन का विषय विकार का जीवन था। इसलिए अपने विचारों को ठीक रखो और अपने मन को वश में रखो। चूंकि मन वश में नहीं रहता इसलिये इसको एक इष्ट दो। तुम्हारी इच्छा हो राम को इष्ट बनाओ या कृष्ण को इष्ट बनाओ। चाहे देवी देवता या गुरु को इष्ट बनाओ मगर इस मन को एक इष्ट दो ताकि तरह तरह के विचार न उठाये। एक के सहारे अपना जीवन गुजारो। तुम्हारा ही मन तुम्हारा गुरु है। तुम्हारी सुरत ही तुम्हारा सतगुरु है। मन को बाहर के गुरु के अधीन करके उससे ज्ञान लो। केवल गुरु गुरु करने या गुरु का ढिंढोरा पीटने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। उसकी बात पर क्रियान्वित होने से तुम्हारा बेड़ा पार होगा।

गुरु हुये संसार में प्रगट, गुरु से ज्ञान लो।

छोड़ दो पाखंड को, गुरुमत की महिमा जान लो॥

मैं तुम लोगों को सतज्ञान देता हूँ जिससे तुम लोगों का जीवन सुख से बीत जाय। जो बात गुरु कहता है उसको तो तुम लोग समझते नहीं हो और धन्य गुरु धन्य गुरु कहते रहते हो। क्या यह पाखंड नहीं है।

गुरु है ब्रह्मा, गुरु है विष्णु, गुरु ही शिव का रूप है।

ब्रह्म गुरु परब्रह्म गुरु, गुरु को सब कुछ जान लो॥

मैं जो कुछ मुंह से कहता हूँ यही मेरा नाम दान है। मेरे पास एक आदमी मानसिंह मौजा घमान जिला गुरदासपुर में आया करता है। उसने बताया कि जब वह 15-16 वर्ष का था तो उस समय बाबा जैमलसिंह जी हमारे गांव में रहा करते थे। एक बार उन्होंने कहा था कि जब पंजाब पर आग बरसेगी तो उस समय जो सन्त सतगुरु आयेगा वह जीवों का उद्धार करेगा। वह सन्त सतगुरु वक्त मैं हूँ। मैं नाम नहीं देता। वचन कहता हूँ। यदि तुम मेरी बात को समझ जाओ तो तुम्हारा लोक भी और परलोक भी बन जायेगा।

कहीं नाम है और कहीं बे निशां है।

हमारे ही मन के वह विश्वास में है॥

राधास्वामी ने भेद अपना बताया।

उससे मिलने की युक्ति अभ्यास में है॥

राधास्वामी दयाल ने युक्ति बता दी कि ऐ इन्सान! तेरी सुरत उस मालिकेकुल की अंश है। उसकी मौज से संसार में आई। यहां आकर माया अर्थात् बुद्धि के चक्र में आकर भ्रम में फंस गई। फिर अपने आदि घर जाने की इच्छा हुई। गुरु मिले। उन्होंने साधन बताया। उस पर अमल किया और अपने रूप का ज्ञान हो गया। समय आने पर अपने रूप में विलीन हो गये।

हंसा मोती वरन नहीं चीना।

पहर गूदड़ी भेष रमाये, जोर ते सन्त कहाये।

भेष लिये पर भेद न जाने, घर घर टुकड़ा खाये॥

मैं संसार को भेद देता हूँ। पुस्तकें लिखता हूँ। सत्संग कराता हूँ। 'मानव कल्याण' मासिक यहां से निकालता हूं और लोगों को मुफ्त बांटता हूं। क्यों? इसलिये कि जीवों को सच्ची समझ आ जाय। वास्तव में सब तुम्हारा अपना ही विश्वास है। किसी ने आज तक यह सच्चाई स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं की। सब तुमको अपने जाल में फंसाते हैं लेकिन मैं तुमको बंधनों से छुड़ाना चाहता हूँ। तुम्हारे अन्तर सब शक्तियाँ मौजूद हैं। तुम स्वयं पूर्ण हो मगर अज्ञान वश दूसरों के आश्रित बने हुये हो। मन ही तो है इस को जिस ओर चाहो लगाओ। एक आस और एक विश्वास रखो। मालिक सबके काम करता है।

हाथ कमण्डल गले मृगछाला, नगर फिरें जैसे भैंसा।

खलरा ऊपर राख रमाये, मन जैसे का तैसा॥

यह भेषधारी साधू घर घर घूमते हैं। यदि कोई इनको भिक्षा नहीं देता है तो यह उनको घूरते हैं कि हम तुमको श्राप दे देंगे। जबरदस्ती लेते हैं।

तीरथ व्रत में बहुत भरमना, बैल चलें जैसे घानी।

काया में करतार बसत है, ताका मरम न जानी॥

तुम्हारे अन्तर जो कर्त्तार है वह है तुम्हारी आत्मा। इसका प्रमाण मुझे आप लोगों से मिला। जब मैं किसी के अन्तर नहीं जाता लेकिन मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रगट होकर आपकी सहायता करता है, तो वह सहायता करने वाला कौन है? वह है तुम्हारी सुरत। इसलिये अपना

सम्मान करना सीखो। आत्मसम्मान (Self Respect), आत्म निरोध (Self Control), आत्मरक्षा (Self Defence) और आत्म साक्षात्कार (Self Realisation) करने की कोशिश करो। यदि मन कमजोर है और तुम नहीं कर सकते तो एक इष्ट बनाओ। इसको पूर्ण मानो और उस का सहारा लो।

पंछी के घोर मीन के मारग, अनुरागी लौलीना।

कहें कबीर सुन भरथरी जोगी, यह मारग है झीना॥

योग के चार मार्ग है- पिपीलिका मार्ग, कपि मार्ग, विहंगम मार्ग और मीन मार्ग।

पिपीलिका मार्ग (चिऊँटी मार्ग) यह है कि जब साधन करो तो लम्बा करके करो। अर्थात् रा-धा-स्व-आ-मी। कपि मार्ग क्या है? कपि कहते हैं बंदर को। तुम ध्यान करते हो तो मन लगता नहीं। कभी कुछ सामने आता है तो कभी कुछ। तुम फिर ध्यान लगाने की कोशिश करते हो। मन फिर दूसरी ओर चला जाता है। तुम फिर उसे घेर घार लाते हो। जीव तीन प्रकार के होते हैं। रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी। इनके लिये भिन्न मार्ग है। यह गुरु अधिक अच्छी तरह जानता है कि जीव के लिए कौन सा मार्ग लाभदायक है जिससे उसको शान्ति मिल सके। एक मीन मार्ग है। जैसे मछली पानी की धार को पकड़कर ऊपर जाती है ऐसे ही शब्द के सहारे ऊपर जाना पड़ता है। यह शब्द मार्ग है। जिसका शब्द खुला हुआ है उनको चाहिये कि अपनी सुरत को शब्द में पिरो कर ऊपर जाय। जिनके अन्दर शुभ विचार और प्रेम का माद्दा है उनको दांई ओर का

शब्द सुनाई देता है। जिनके अन्तर सांसारिक वासनायें तथा घृणा, द्वेष और हेरा फेरी है उनको बांई ओर का शब्द सुनाई देता है। जिनको सिवाय मालिक सर्वाधार की चाह के और कोई इच्छा नहीं है उनकी सुरत सुषुम्ना नाड़ी में से होती हुई ऊपर को जाती हैं। इसीलिए सबसे पहिले अपने मन को निर्मल करो।

जिनके मन गंदे हैं उनकी सुरत बांई ओर को जाती है। जिनके मन में भलाई और परोपकार है उनकी सुरत दांई ओर जाती है। जिनके मन में न नेकी है न बदी है, केवल अपने आदि घर जाने की इच्छा है उनकी सुरत सीधे ऊपर जाती है। जिस तरह बलगम छाती से निकलता है, टट्टी गुदा से और पेशाब मुत्रेन्द्रिय से निकलता है, ऐसे ही अच्छे विचार इंगला नाड़ी से और बुरे विचार पिंगला नाड़ी से और अच्छे हैं न बुरे हैं वह सुषुम्ना से। इसलिये सबसे पहले अपने मन को निर्मल करो। अन्यथा कोई गुरु तुम्हारे बांये शब्द को बन्द नहीं कर सकता। मुझे आज तक कभी दांई और बांई ओर से शब्द नहीं आया। क्यों? यह मेरे पिछले जन्म के कर्म थे। जहाँ मैं पहुंचा हूं यह एक जन्म का काम नहीं है। यह जन्म जन्मान्तर का क्रम है। प्रकृति के अनुसार अन्तर की चढ़ाई होती है। यह मार्ग बड़ा सूक्ष्म है।

सबको शान्ति।

प्रवचन

परमसन्त

हजूर परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर, 22.9.74

बन्दनम् सतज्ञान दाता, बन्दनम् सतज्ञान मय।
बन्दनम् निर्वाणदाता, बन्दनम् निर्वाण मय॥
भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब।
आप ही हैं सिंधु सद्गति, जीव जन्तु मीन सब॥
आग गुरु सतगुरु दया और प्रेम के भंडार हैं।
आप कर्त्ता धर्त्ता हैं, करतार जगदाधार हैं॥
ऋद्धि सिद्धि शक्ति नौ निद्ध, हैं चरण में आपके।
बच गया भव दुख से जो आया शरण में आपके॥
भक्ति दीजे नाम की सत नाम में विश्राम दे।
राधास्वामी अपना कीजे, राधास्वामी धाम दे॥

यह शब्द सुना। मेरे अन्तर एक सवाल पैदा होता है कि फकीर! तुमने अपने आपको सन्त सतगुरु वक्त कहा है। तुम दुनिया को क्या ज्ञान देना चाहते हो। सच्ची बात तो यह है कि जो ज्ञान मुझे

प्राप्त हुआ वह तो यह कहता है कि फकीर बिल्कुल चुप हो जाओ और बोलो नहीं मगर मुझसे चुप रहा नहीं जाता। क्यों? मालिक की मौज या दाता दयाल जी महाराज का संस्कार या मेरा दिमाग। कल शाम को भी रेडियो पर सुना और आज सुबह भी सुना कि अमरीका में 250 मील प्रति घंटा के वेग से तूफान आया, वर्षा आई और पहाड़ गिर गया जिसके नीचे तीन चार गांव दब गये। आठ दस हजार आदमी मर गये और हजारों घायल हो गये। कुदरत ने मेरा दिमाग ही ऐसा बनाया है कि मैं सोचने के लिए विवश हूं तुम भी सोचो कि जगह जगह तूफान आते हैं, बाढ़ भूचाल और बीमारियां आती हैं। यह क्यों आती हैं? हम कहते हैं कि यह हमारे कर्म हैं। लोगों को ज्ञान देने से पहिले अपने आपको सन्तुष्टि देने के लिये अपने आप से ही सवाल करता हूं कि क्या कर्म की फिलोस्फी ठीक है? आज कल साईंस का युग है। हर एक काम यहां किसी सिद्धान्त या नियम के अधीन होता है। लोग कहते हैं कि ईश्वर वर्षा करता है। ठीक है बंगाल की खाड़ी या हमारे समुद्रों से जो मानसून आती है वह हिमालय पर्वत से टकरा कर भारत में वर्षा करती है, यदि आप ईश्वर से यह कहो कि इसी मानसून से हिमालय की दूसरी ओर वर्षा कर दे तो सम्भव नहीं क्योंकि मानसून भारी होने के कारण इतनी ऊँची नहीं जा सकती जितनी ऊँचाई हिमालय पर्वत की है। वह हिमालय को पार नहीं कर सकती। इसलिये यह मानसून हिमालय के दूसरी ओर वर्षा नहीं सकती, ऐसा ही कुदरत के कानून के अनुसार सूर्य शाम को छिपता है। यदि आप ईश्वर को कहो कि दोपहर को सूर्य को छिपा दे या रात को बारह बजे

सूर्य निकल आये तो यह असम्भव है। इसलिये कोई नियम है जिसके अधीन यहां सब कुछ हो रहा है।

न्यूटन की थ्यौरी सिद्ध करती है कि यदि तुम अपना हाथ हिलाओ तो तुम्हारे हाथ की गति ऊपर के लोकों तक जाती है। वहां से बल लेकर फिर वहाँ ही लौट आती है जहाँ से कि वह चली थी और फिर वह अपना प्रभाव करती है। इससे सिद्ध हुआ कि यहां जो भी हो रहा है यह सब हमारे अपने ही कर्म विचार और गति का परिणाम है। एक शरीर की गति है, एक मन की गति है और एक आत्मा की गति है। गति चाहे स्थूल पदार्थ की है चाहे सूक्ष्म पदार्थ की है चाहे कारण पदार्थ या तत्त्व की है उसकी गति ऊपर जाकर वहां से शक्ति लेकर फिर वहां ही आ जाती है जहां से कि वह चली थी। गति केवल मनुष्य तक ही सीमित नहीं है। हर प्रकार की वस्तुयें गति होती हैं। प्रकृति की हर प्रकार की वस्तु की गति ऊपर तक जाती है और फिर वापिस आकर प्रभाव करती है। सन्तों के मार्ग में इसी का नाम काल और माया है। मैंने जो सतज्ञान समझा है वह अपने कर्म भोग वश कहता हूं।

एक सतज्ञान तो मुझे यह कहता है कि फ़कीर! चुप हो जा मगर कर्म का चक्र है, चुप हुआ नहीं जाता। इस समय तुम देखो कि इतने बड़े और अमरीका के प्रेसीडेन्ट निक्सन ने वाटर गेट स्कैण्डल में क्या किया। देश का जैसा राजा होता है वैसा ही प्रभाव उसकी प्रजा पर पड़ता है। ऐसे ही घर के बुजुर्ग का प्रभाव सन्तान पर पड़ता है। यदि एक आदमी को आतशिक या सुजाक जैसी कोई बीमारी हो जाती है

तो उसका प्रभाव उसकी सन्तान में भी अवश्य होता है। यदि बेटे में नहीं भी प्रगट होता तो पोते में अवश्य प्रगट होगा। यह तो शारीरिक रोगों की दशा है। ऐसे ही मां बाप के जैसे विचार होंगे वह उसकी सन्तान पर अवश्य प्रभाव करेंगे। इतिहास को पढ़ो। कौरव और पाण्डवों में ठंडी लड़ाई थी। द्रोपदी ने जो कठोर वचन दुर्योधन को कहे कि अन्धों की सन्तान अन्धी ही होती है इसका परिणाम यह हुआ कि भारत के 18 अक्षोहिणी वीर मारे गये। कितने की परिवार बिगड़ गये। कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गईं और कितने बच्चे मारे गये। आदमी जितना बड़ा होता है उतना ही उसके विचार का प्रभाव प्रबल होता है। अकेले रावण ने अपराध किया और उसका फल राक्षसों को भोगना पड़ा।

तो मैं क्या सतज्ञान देना चाहता हूं कि यथा राजा तथा प्रजा। जैसे मां बाप, वैसी सन्तान। पाकिस्तान वालों के मन में भारतवासियों से शत्रुता रही। कश्मीर पर आक्रमण एक बार किया, दूसरा किया और फिर तीसरा किया। अब उनके विचारों का परिणाम देखो। स्वयं पाकिस्तान में क्या हो रहा है। राजा का विचार अधिक प्रभाव करता है और प्रजा का विचार कम प्रभाव करता है। इस समय भारत में सब पार्टियों को एक दूसरे से घृणा है और इस घृणा और द्वेष के विचार देश में फैल रहे हैं। इसलिये न्यूटन की थ्यौरी के अनुसार देश का भला नहीं होगा। यह है सतज्ञान जो मैं संसार को देना चाहता हूँ।

बंगलादेश में क्या कुछ नहीं हुआ। कितनी बाढ़ें आती हैं और

कितने रोग और आपत्तियाँ आ रही हैं। यू.एन.ओ. कितना प्रयत्न कर रहा है किन्तु क्या कहीं शान्ति है। अपने घरों में देखो। सब एक दूसरे के विरोधी हैं। घरों में झगड़े हैं। तुम्हारे विचारों का प्रभाव तुम्हारी सन्तान पर और फिर उनकी सन्तान पर अवश्य पड़ता है। यह कानून है।

इसके बारे में एक कहानी याद आती है कि एक राजा एक घोड़ी पर चढ़ कर लड़ाई के मैदान में जा रहा था। आगे एक नहर पार करनी थी। घोड़ी पानी में जबरदस्ती बैठ गई। राजा छलाँग मार कर बाहर निकल गया। जांच करने पर ज्ञात हुआ कि इस घोड़ी की नानी में यह आदत थी कि वह पानी में बैठ जाया करती थी और वह आदत उस घोड़ी को उत्तराधिकार में आई। मैं चूंकि सन्त सतगुरु हूँ इसलिये कहे जाता हूं कि जिस प्रकार के विचार हमारे होंगे वह हमारी सन्तान में अवश्य आयेंगे।

मैं साइकोलोजी (मनोविज्ञान) का मास्टर हूँ यद्यपि 100 प्रतिशत नहीं लेकिन इस रहस्य को जानता हूं। इस समय हमारा घरेलु या राष्ट्रीय जीवन क्यों बिगड़ा हुआ है। किसी को रहस्य का पता नहीं। देखो! यदि तुम आम की गुठली को सौंफ या अजवाइन के पानी में 24 घंटे भिगोकर बोओगे तो जब उस पौधे में फल लगेंगे तो उसमें सौंफ या अजवाइन की सुगन्ध आयेगी। ऐसे ही इस समय तुम लोग जितनी सन्तान पैदा कर रहे हो, वह कोई तो शराब पीकर स्त्री के पास जाता है, कोई अफीम खाकर जाता है, कोई और कुछ खाता है। तुम

कैसे आशा कर सकते हो कि ऐसी अवस्था में जन्म लेने वाली सन्तान अनियंत्रित (बे-जब्त) नहीं होगी और कोई शुभ काम करेगी। इसलिये आज तुम देख रहो हो कि आजकल का युवक वर्ग किधर जा रहा है। तुम लाख सत्संग करो, लाख पाठ करो, लाख यू.एन.ओ. कान्फ्रैंस करो बीज का प्रभाव नष्ट नहीं होगा। इसलिये सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा करो। अपने स्वाद के लिये पैदा न करो। तुम लोग अपने स्वार्थ के लिये धोखा फरेब करते हो, हर जगह मिलावट करते हो, ठगी करते हो। तुम लाख बाबा फकीर के चेले बन जाओ या और किसी गुरु के चेले बन जाओ तुम्हारा जीवन नहीं बदल सकता। मैंने अपने आप को सन्त सतगुरु वक्त कहा है। लोग मुझ पर उंगली उठाते हैं और मेरा विरोध भी करते हैं, मुझे गाली भी देते हैं मगर मुझे गुरु की आज्ञा है इसलिये यह मेरा कर्म भोग है मैं फूंक मार कर जगत कल्याण नहीं कर सकता।

देखो आज भी भूमि तो वही है जो पहिले थी किन्तु पहिले भूमि में अन्न बहुत कम पैदा होता था और आज कल विज्ञान से नये नये प्रकार के बीज बन गये। कई तरह की खाद तैयार हो गई। इनकी सहायता से अब पहिले से कई गुना अन्न पैदा होता है। पशुओं में काफी सुधार आ गया। अच्छी अच्छी नस्ल की गायें और भैंसे तैयार हो गई मगर मानव नस्ल के सुधार की ओर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया।

सम्भव है कि लोग कहें कि मैं छूत छात के पक्ष में हूं। सुनो!

जिस तरह हमारे शरीर के विभिन्न अंग एक दूसरे के साथ जुड़े हुये अपना काम अलग अलग विचार धारा वाले मनुष्य आपस में छूत छात या घृणा द्वेष के बिना मिलजुल कर अपना काम कर सकते हैं और करें तो संसार का कल्याण हो सकता है। जहाँ एकता का सवाल है, वह आत्मिक दृष्टि से है। जहां जाति, वर्ण और कुल का सवाल नहीं है वह भी आत्मिक दृष्टि से, चूंकि आत्मपने में अति वर्ण और कुल आदि का कोई विचार नहीं है इसमें भी संस्कार काम करते हैं जैसे हमारे शरीर में हाथ और काम करते हैं, पांव और काम करते हैं और आँख कान नाक और काम करते हैं। जैसे इनमें जो हमारी आत्मा है वह एक है और वह इन सब पर अधिकार रखता है, वैसे ही एकता में अनेकता और अनेकता में एकता है।

हर एक जगह यह आशा थी कि सन्त मार्ग वाले या धार्मिक जगत वाले संसार में नेकी फैलायेंगे लेकिन यह कैसे नेकी फैला सकते हैं। मैंने चेला बन के देखा और गुरु बनके देखा। मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है। किसी को दवा बता जाता है किसी को बच्चा दे जाता है, किसी को अन्त समय पर आकर ले जाता है लेकिन मैं कहीं नहीं जाता और न मुझे इन घटनाओं का कोई पता होता है। यह सब लोगों का अपना विश्वास है। यह महात्मा लोग चाहे किसी भी डेरे या गद्दी, धर्म या आश्रम के हैं इनके रूप भी लोगों के विश्वास के अनुसार उनके अन्तर प्रगट होते हैं मगर कोई किसी के अन्तर नहीं जाता, यह गुरु और महात्मा लोग अपना झूठा प्रोपेगंडा करते हैं। जीव उनके जाल में फँस जाते हैं और अपना रुपया इनको भेंट करके लुट

जाते हैं। जब गुरुओं की यह दशा है तो आप यह कैसे आशा कर सकते हैं कि उनके चेलों के जीवन सुधर जायेंगे।

मैं आपको सतज्ञान देना चाहता हूं। वह सतज्ञान क्या है? सुनो! तुम लाख ईश्वर की भक्ति करो और लाख देवी देवता को मनाओ किन्तु जो जो कर्म तुमने किये हुये हैं और जो जो विचार तुम्हारे में आये हैं या आ रहे हैं या तुमको तुम्हारे माँ बाप से मिले हैं तुम उनके फल से बच नहीं सकते। यही राधास्वामी दयाल ने कहा है:-

करम जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ता।

आप लोग मेरे सत्संग में आते हैं। आप मेरी बातों पर अमल करो या न करो, मैं इसका जिम्मेदार नहीं हूं। मेरा काम सतज्ञान देना है और अमल करना आपका काम है। मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूं। तुम अपनी ड्यूटी करो। यदि मेरी बातों पर अमल करोगे तो लाभ उठाओगे। यदि नहीं करोगे तो तुम्हारी इच्छा। ऋषियों ने एक नियम बना दिया कि मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहो। सृष्टि का सारा काज व्यवहार किसी नियम के अधीन हो रहा है। यह कानून वही है जो मैंने न्यूटन की थ्यौरी बताई है। जैसा तुम्हारा विचार होगा उसके अनुसार तुमको फल मिलेगा।

इन मिलावट करने वालों और स्मगलरों की क्या दशा है? यह आज कानून के पंजे में आ रहे हैं। मैं तो यह कहूंगा कि आजकल के गुरु और पंथ वाले मिलावट करने में सब से प्रथम हैं। मैं आपसे यह बात कहता हूं जो मेरे तजुर्बे में आई है। मैं दूसरों का उदाहरण नहीं

देता। कल एक स्त्री ने मुझे बताया कि मैं अपने कमरे के आगे सोई हुई थी। रात को ऊपर से एक ईंट गिरी और मेरे कूल्हे पर लगी जिससे मुझे बहुत चोट आई। मैंने आपको याद किया। आप आ गये। आपने दो इन्जैक्शन लगा दिये और पलस्तर कर दिया। सुबह जब मैं उठी तो मुझे बहुत आराम था। अब मैं तो उसको इन्जैक्शन लगाने या पलस्तर करने गया नहीं, न मुझे पता था कि उसके ऊपर ईंट गिरी है। ऐसे ही लोगों के विश्वास के अनुसार इन गुरुओं का रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है लेकिन किसी के अन्दर कोई जाता तो है नहीं मगर सच्ची बात कोई नहीं बताता कि मैं तो गया नहीं। उल्टा जीवों को अज्ञान में रखकर उनसे धन लूटा जाता है और यश भी लिया जाता है। इसी अज्ञान के कारण जगह जगह डेरों, मन्दिरों, मसजिदों और गुरुद्वारों पर अरबों रुपया खर्च हो गया। अब सन्त कृपाल सिंह चोला छोड़ गये। मरने से दस दिन पहिले उन्होंने कहा था कि अभी मैं दस वर्ष और जीऊँगा लेकिन दस दिन बाद ही मृत्यु हो गई। मैं सोचता हूं कि क्या इन सन्तों को यह ख्याल नहीं है इन्होंने भी एक दिन जाना है?

इस जगह गुरुओं के चेले जगह जगह इनका प्रोपेगंडा करते हैं लेकिन देश में कहीं शान्ति नहीं है। हो भी कैसे? ऐसे आचरण से तुम कैसे आशा कर सकते हों कि तुमको जीवन में शान्ति आयेगी या देश में शान्ति आयेगी। शास्त्र कहते हैं कि 'नर शरीर सुर को भी दुर्लभ'। सोचो और अपना जीवन बनाओ। यदि आज हेरा फेरी या मिलावट करके लखपती भी बन गये तो भी एक दिन मरना है। क्यों चार दिन के जीवन के लिए अपने बुरे कर्म बढ़ा रहे हो। अपने घर वालों से या

रिश्तेदारों से या दूसरों से घृणा द्वेष रख कर तुम कर्म के फल से जो बच नहीं सकते। दूसरे अपनी भी और दूसरों की भी हानि करोगे। हमारे विचार को यहां से ऊपर जाने और फिर लौटने में कुछ समय लगता है। इसलिये यदि तुम अच्छे या बुरे विचारों के ऊपर से लौटने से पहिले ही तुम मर गये तो जहाँ तुमको दोबारा जन्म मिलेगा, यह विचार वहां जाकर तुम पर प्रभावित होंगे। यही कारण है कि हम इस जन्म में यदि पाप नहीं भी करते तो भी हम पर आपत्ति आ जाती है, वह पिछले जन्म के कर्मों का फल है।

इसलिये मैं निर्भय होकर कहे जाता हूं कि यदि यह कर्म फिलोस्फी ठीक हैं तो जिन महात्माओं और महापुरुषों ने पर्दा रख कर अपने मान और आदर के लिये धन इकट्ठा किया और जायदाद बनाई और अपनी संतान को सौंप गये, वह अपने इस कर्म से बच नहीं सकते। वह जहां भी जायेंगे, कर्म उनके साथ जायेगा। यह तो कहते हैं कि जीवों को कि हम तुमको सत लोक पहुंचा देंगे लेकिन कर्म की फिलोस्फी के अनुसार इनमें से कोई भी सतलोक नहीं गया। जो लोग यह कहते हैं कि हमारे प्रसाद से यह हो गया वह हो गया, वह अपना प्रोपेगंडा करवाते हैं। यह सब धोखा है।

संसार में सुखी रहने का सबसे अच्छा योग यह है कि अपनी नीयत को शुद्ध रखो। अपने स्वार्थ के लिये किसी से छल कपट न करो। किसी गरीब को मत सताओ। उसकी कमजोरी का अनुचित लाभ न उठाओ अथवा इस कर्म का फल तुमको भोगना पड़ेगा। यह है

सत ज्ञान जो मैं तुम लोगों को देना चाहता हूं।

हम जो कुछ भी इस दुनिया में सोचते हैं, वह हमारे विचार इस ब्रह्माण्ड में स्थित हैं क्योंकि पदार्थ कभी नाश नहीं होता। यह साईंस का सिद्धान्त है। हम चले जायेंगे लेकिन हमारे विचार यहां रहेगे। इसका प्रमाण देता हूं। जरमनी के सेंट हाल में आज से 500 वर्ष पहिले के भाषण उन्होंने जब रिकार्ड किये हैं। हमारे विचारों का नक्शा होता है। जहां जहां अनुकूल मस्तिष्क इनको मिलता है वहां प्रभाव करते हैं। लोग चन्द्रमा पर गये। पालकी में थे। पृथ्वी से उनके साथ वस्तुओं का मार्ग स्थित। यदि वह न भी सुनते तो इसका क्या अर्थ नहीं कि विचार या समाचार वहां नहीं पहुंचे। इसलिये हमेशा मन कर्म और वचन से शुद्ध रहो। हमारे ऋषियों का और यही सन्तों का मार्ग है। जो कुछ हम कहते हैं या विचार करते हैं इसका फल हमको भोगना पड़ेगा। दाता दयाल का शब्द है।

ऐ मेरे प्यारे भाई, देखो सँभल के चलना।
खोटे करम न करना, खोटी न बात कहना॥
दुख दोगे दुख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को, फिर गम पड़ेगा सहना॥
कौल व ख्याल करतब, दरिया में हैं मुशाबा।
तुम देखना न इनकी लहरों में पड़के बहना।
मन इन्द्रियों पै भाई, जब्त रखना तुम बराबर।

जीवित बने रहोगे, खुशहाल होके रहना॥

अपनी न शिश्त रखना तुम आत्मा पै हरदम।

आत्म स्वरूप रह कर, संसार में विचरना॥

मुझे याद है कि मैंने एक पुस्तक 'रीयलइन्डैन्पेन्स' सन् 1947 ई. लिखी थी। उसका हिन्दी में अनुवाद हुआ जिसका नाम 'विश्वशान्ति' है। उसमें मैंने लिखा था कि इस समय के जो हमारे विचार हैं यह देश में तरह तरह की आपत्तियाँ लायेंगे। आज शत प्रतिशत वह ठीक हो रहा है। इसलिये मैं जो कुछ भी कहता हूं। यद्यपि मेरा अनुभव ठीक सिद्ध होता है लेकिन फिर भी मुझे किसी बात का दावा नहीं है।

संसार में सुखी रहने के लिये तो जो मैंने अनुभव किया वह बता दिया। अब रह गया कि निर्वाण कैसे मिलता है इसका मुझे पता नहीं। दूसरे सन्तों को निर्वाण कैसे मिला और मिला भी या नहीं मिला, मुझ को पता नहीं। मैं सत्य प्रिय मनुष्य हूं। यदि पर्दा रखता तो दूसरे सन्तों की तरह मैं भी बहुत बड़ा डेरा बना लेता लेकिन मैं डर गया। मैंने यह काम नहीं किया। क्यों? यदि मैं आपको बात नहीं बताता और कहता हूं कि हां मैंने आपको पुत्र दिया या दवा दी तो मेरा क्या परिणाम होगा। इसलिये पिछले सन्तों ने यदि अपने डेरों के चलाने के लिए पर्दा रखा को इनमें से कोई भी निर्वाण को प्राप्त नहीं हुआ। निर्वाण क्या है? मुझे निर्वाण दिलाने वाले आप लोग हैं। आपके अनुभवों से बात समझ में आ गई गुरु पदवी पर आने से मुझे निर्वाण का पता लग गया।

ज्ञान हो गया कि अन्तर में कौन जाता है? न मैं न कोई और गुरु किन्तु वह जाने वाला या प्रगट होने वाला तुम्हारा अपना ही विश्वास है या वह संस्कार हैं जो तुम्हारे दिमाग पर पड़े हुये हैं।

यदि संस्कार अच्छा है तो उसका फल भी अच्छा होगा। यदि संस्कार बुरा है तो उसका फल भी बुरा होगा। हम इस संस्कार को सत्य मान कर इसमें फँस जाते हैं। यही स्वामीजी ने कहा है—

तूने जगत को सत कर पकड़ा, कैसे पाओ नाम निशान॥

जगत क्या है? तुम्हारे अन्तर में जितने रूप रंग, भाव विचार पैदा होते हैं यही तुम्हारा जगत है। तुम इनको सत्य मानकर इनमें फँसे रहते हो। जब तक कोई आदमी इनको सत मानता रहेगा, वह असली नाम को जिस नाम से कि आदमी आवागवन के चक्र से निकल सकता है उसको प्राप्त नहीं कर सकता। यदि मनुष्य को यह विश्वास हो जाय कि यह संस्कार या विचार वास्तव में है नहीं, केवल माया है और यह कल्पित है तो फिर वह इनके प्रभाव को ग्रहण नहीं करेगा। जब वह ग्रहण नहीं करेगा तो फिर यह आवश्यक है कि मन से आगे अपने आत्मस्वरूप या प्रकाश में जायेगा। आत्मस्वरूप क्या है? प्रकाश। बाबा सावनसिंह जी या बाबा फकीर या राम या कृष्ण का रूप तुम्हारा आत्मस्वरूप नहीं है। यह तो तुमने अपने विश्वास से स्वयं उत्पन्न किया है। इसलिये यदि अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आयेगा तो तुम जीवन की अच्छाई और बुराई से बच जाओगे। यही बात कबीर ने कही है—

शब्द गुरु को कीजिये, बहुते गुरु लवार।

अपने अपने स्वाद को, ठौर ठौर बटमार॥

हुजूर महाराज जी ने अपनी 'प्रेम बाणी' पुस्तक में स्पष्ट लिख दिया है कि सतगुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश हैं।

मैं तो साधारण हिन्दू था। राम कृष्ण को और देवी देवताओं को मानता था। दाता दयाल जी महाराज ने मुझे राधास्वामी मत की बाणी पढ़ने को दी। उनमें सब का खंडन था। दाता दयाल को तो मैं छोड़ न सका क्योंकि उन पर मेरा पूर्ण विश्वास था तो उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूँगा। शायद इसीलिये दाता दयाल जी ने मेरे कर्म कटवाने के लिये यह काम दिया हो। यदि मुझे यह गुरुयायी न मिली होती तो फिर भी मैं अपना अनुभव वर्णन कर जाता। तो निर्वाण–किसको मिलता है ? जिसको यह विश्वास हो जाय कि जो कुछ भी अन्तर में प्रगट होता है, यह माया है। असलियत नहीं है। फिर वह अपने आपको प्रकाश और शब्द के साथ जोड़ेगा, तब वह पार जायेगा अन्यथा नहीं। तुम लाख बाबा फकीर या किसी सन्त या गुरु का ध्यान करते रहो तुम पार नहीं जा सकते। हां यह और बात है कि तुमको अच्छी योनि मिल जाय। जिस पवित्र विभूति ने राधास्वामी मत चलाया है उन्होंने अपनी 'प्रेम बाणी' नामी पुस्तक में साफ लिखा है कि अन्त समय पर फिल्म चलती है। वह जो कुछ तुमने जीवन में किया है वह सामने आता है। जीवन में जिस जिस से

तुम्हारा सम्बन्ध रहा है वह सब सामने आ जाते हैं। गुरु भी आ जाता है और शब्द भी सुना देता है। फिर कुछ समय ऊपर के लोकों में वह जीव रहेगा। वहाँ उसको सत्संग भी मिलता रहेगा। फिर जब कोई सन्त सतगुरु इस संसार में आयेगा तो वह जीव भी जन्म लेकर यहां आयेगा। उसके सम्पर्क में आकर अपनी बाकी कमाई पूरी करेगा और अपने घर वापिस पहुंच जायेगा। यही बात सनातन धर्म में कही गई है लेकिन दुनिया ने समझा नहीं है। गरुड़ पुराण में लिखा हुआ है कि जब तक कोई आदमी गायत्री मंत्र का अजपा जाप करता हुआ और गुरु स्वरूप का ध्यान करता हुआ पारब्रह्म (प्रकाश) और शब्द ब्रह्म (शब्द) के देश में नहीं जायेगा वह आवागमन से बच नहीं सकता। बात तो सबने एक ही की किन्तु वर्णन शैली का अन्तर है लेकिन इन मार्गों पर चलने वालों ने अपने स्वार्थ को शामिल करके सनातन धर्म और सन्त मत की शिक्षा में मिलावट कर दी।

दुर्गनियाँ! मुंशीराम! और दूसरे सज्जनों! आप लोगों ने तन मन और धन से मेरी और मानवता मंदिर की सेवा की है। यदि मैं आपको सच्ची बात नहीं बताता तो मैं अपराधी हूँ। एक धनी व्यक्ति का इकलौता युवा लड़का मेरे पास आया करता था और घर का कोई काम नहीं था। 24 घंटे अभ्यास में ही लगा रहता था। लड़के के बाप ने मुझे कहा कि महाराज! इसको कुछ समझाओ अन्यथा हमारा काम कैसे चलेगा। मैंने लड़के से कहा कि बच्चा! तुम युवा हो। मां बाप के अकेले लड़के हो। अपने घर का भी काम धंधा किया करो। लड़के ने कहा कि बाबा जी! मैंने भृगुसंहिता में अपना टेवा दिखाया तो पंडित ने

मुझे बताया कि तुम पिछले जन्म में काशी में बड़े विद्वान थे और ज्ञानी थे। तुम लड़कों को ज्ञान सिखाया करते थे। तुम्हारे पास एक लड़का ज्ञान सीखने के लिये आया तो तुम्हारे लड़के ने कहा कि पिताजी! इसको सारा ज्ञान मत सिखा देना अन्यथा यह मेरे बराबर हो जायेगा और मेरी कदर नहीं होगी। तुमने ऐसा ही किया। जब उस लड़के को इस बात का पता लगा कि गुरु ने मुझे इस कारण पूर्ण ज्ञान नहीं सिखाया तो उसे बड़ा दुख हुआ और वह मर गया। फिर जब तुम मरे तो तुम्हारा जन्म बंगाल में एक मुसलमान के यहाँ हुआ। उस समय चेतन्य महाप्रभु बंगाल में थे। वह तुम्हारे घर गये और तुमको सारा हाल बताया। फिर तुमने चोला छोड़ने के बाद यहां आकर जन्म लिया है।

अब आप लोग आये हैं। यदि मैं अपना ज्ञान जो मैंने जाना है आप लोगों को नहीं बताता तो मेरा क्या परिणाम होगा। मैं किसी के साथ छल कपट या हेरा फेरी भी नहीं करना चाहता। जिसका जी चाहे मेरे सत्संग में आये या न आये। मन्दिर के लिये पैसे की तो मुझे भी आवश्यकता है लेकिन मैं पर्दा रख कर या अज्ञान में रख कर किसी से पैसा नहीं चाहता। मन्दिर चले या न चले, इस बात की परवाह नहीं है। मुझे तो मेरे सत्गुरु दाता दयाल जी की आज्ञा है और मैं उसका पालन कर रहा हूँ। इसका परिणाम क्या होगा इस बात की ओर मेरा ध्यान नहीं जाता। सिपाही का काम है आज्ञा पालन। इसके परिणाम का सिपाही जिम्मेदार नहीं है। इसलिये आप लोग अपना कर्म बनाओ। जब कर्म बन जायेगा तो फिर जन्म भी बन जायेगा। यह लेना

देना प्रारब्ध कर्म के अनुसार होता है। जिसने लेना है वह हर हालत में ले लेगा। जिसने देना है वह स्वयं आके दे जायेगा।

इस संसार में मेरा अनुभव मेरे सामने है। जो काम तुम निष्काम होकर करोगे उसका प्रभाव तुम्हारे दिमाग पर नहीं आयेगा। यह मैं क्यों कहता हूं? 12 वर्ष हो गये यह मन्दिर मैंने बनाया लेकिन कभी भी मन्दिर, न मन्दिर का कोई कर्मचारी मेरे स्वप्न में आया। परदेसी मेरे घर में राशन का सारा खर्च देता है लेकिन वह भी कभी स्वप्न में नहीं आया। चूंकि माँ बाप और स्त्री से मेरा प्रेम था इसलिये कभी कभी वे स्वप्न में आ जाते हैं। रेलगाड़ी व तार के महकमे में मैंने अपनी जीविका के लिये अर्थात् स्वार्थ के लिये काम किया था, वह आज तक भी मुझे नहीं छोड़ते यद्यपि नौकरी से रिटायर हुये 32 वर्ष हो गये हैं। इस अनुभव के आधार पर मैं कहता हूँ कि जो आदमी काम को अपनी ड्यूटी समझ कर करता है, वह उसमें फँसता नहीं।

भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब।
आप ही हैं सिन्ध सद्गति, जीव जन्तु मीन सब॥

भक्ति मुक्ति आदि गुरु के आधीन कैसे हैं? बाहर का गुरु जीव को समझ, विवेक और जीने का भेद बताता है कि यह करो, यह न करो। यह है गुरु की महिमा। जो लोग गुरु के रूप को नहीं समझते और अज्ञान की भक्ति करते हैं, वह गुरु पशु हैं।

गुरु पशु नर पशु त्रिया पशु, वेद पशु संसार।
मानस ताही जानिये, जाहि विवेक विचार॥

निर्वाण कब मिलेगा ? जब यह ज्ञान हो जायेगा कि न मैं शरीर हूं, न मन हूं, मेरा रूप इनसे न्यारा है, तब वह मनुष्य संसार के चक्र में नहीं आयेगा। तब उसको निर्वाण प्राप्त होगा। निर्वाण से आगे है हकीकत (सत पद) हमारा आपा अर्थात् हम जब शारीरिक, मानसिक और आत्मिक भान बोध को छोड़ जाते हैं तो वह जो अगली अवस्था है उसका नाम है सत, अलख, अगम। यह निर्वाण से परे की अवस्थायें हैं। मैं अब इन अवस्थाओं का साधन करता रहता हूं मगर मेरे प्रारब्ध कर्म या मेरी प्रकृति या मौज मालिक मुझे फिर नीचे ले जाती है और कभी कभी सत अवस्था को भूल जाता हूं। मैं भी इन भान बोधों में फँस जाता हूँ। यह मेरी रिसर्च है। लेकिन सात वर्ष की आयु से इस मार्ग पर चल रहा हूँ और सारी आयु इसी खोज में बीती है। मैं सच्चाई वर्णन करता हूँ। यह गद्दियों वाले मुझसे सहमत नहीं हैं। यह कहते हैं कि बाबा फकीर की कोई पुस्तक न पढ़ो। उसका सत्संग मत सुनो। क्यों ? क्योंकि उनका जाल टूटता है। यह गुरुइज्म एक जाल है। जैसे मकड़ी जाला बना लेती है और कोई मक्खी फँसी वैसे ही मकड़ी ने झटपट मार कर उसको पकड़ा। ऐसे ही आज कल गुरु पर्दा रख कर जीवों को अपने जाल में फँसा कर उनका धन लूटते हैं और उनसे मान आदर लेते हैं। और उनको अपने अधीन बना लेते हैं। यह है सच्चाई। मैं देखना चाहता हूं कि सत्यम् विजयते में भी सफलता होती है या नहीं।

अब आपने करना क्या है ? यह मन महा चंचल है, वश में नहीं आता। इसको वश में करने के लिये एक तो इलाज है कि आदमी

को किसी का डर हो। माँ बाप का हो या कुल का हो, या ईश्वर का हो या गुरु का हो। जब तक भय नहीं है और वह किसी का सम्मान नहीं करता वह मन को वश में नहीं कर सकता और न वह जीवन में सफल हो सकता है। बसरा बगदाद में मैं कभी बाहर नहीं जाता था और दूसरे मेरे साथी भी जब शहर में जाते थे तो दो तीन मिल कर जाते थे। क्यों ? क्योंकि हमको दाता दयाल जी का भय था कि यदि हम कोई गलती करेंगे तो दाता दयाल को क्या मुंह दिखायेंगे। इसलिए हम वहां बुराई से बच गये। अत: बड़े बूढ़ों का अदब करना चाहिये। जिसको कोई भय नहीं वह अपने मन को वश में नहीं कर सकता। लेकिन आज कल क्या है ? लड़के माँ बाप का अदब नहीं करते। शासन का डर नहीं। अब तो लोग प्रेसीडेन्ट और प्रधानमंत्री तक को बुरा भला कह देते हैं। अब तो मालिक का भी कोई डर नहीं कर्म के दण्ड का भी कोई डर नहीं इसलिये मन वश में आये तो कैसे आये।

जहां तक हो सके अपनी सोसाइटी अच्छी रखो। अच्छी संगत के प्रभाव से जीवन अच्छा बन जाता है। अच्छी पुस्तकें पढ़ो। इससे तुम्हारे विचार अच्छे रहेंगे किन्तु आज कल तो लड़के और लड़कियां गंदे नाविल पढ़ते हैं। इससे चरित्र बिगड़ जाता है। आज कल एक फिल्म चली हुई है- सैक्स का गुप्त ज्ञान। इसमें स्त्री पुरुष नंगे और भोग करते दिखाये जाते हैं। कामांग के आसन दिखाये जाते हैं। समझ नहीं आती कि हमारी लीडरों की बुद्धि को क्या हो गया है। युवा वर्ग का चाल-चलन बिगड़ रहा है। युवाओं के बारे में तो क्या कहूं आप लोग जो बूढ़े आदमी हैं अपनी ओर देखो कि क्या ऐसे दृश्य देखने से

तुम्हारे अन्तर काम पैदा नहीं होता? क्या तुम्हारा मन विचलित नहीं होता? इसलिये सत्संग की महिमा है। किसी पूर्ण पुरुष के सत्संग में जाओ। उसके वचन सुनो। उन पर अमल करो और अपना जीवन बनाओ।

सत्संग की महिमा जान गया।

जान गया पहिचान गया, सत्संग की महिमा जान गया॥

सिमट सिमट जल भरहिं तलाबा, त्यों सद्गुन चित आवें।

नित सत्संग के वचन से सज्जन, अपना जन्म बनावें॥

एक दिना का काम नहीं है, दिन दिन सत्संग कीजै।

काल कर्म के जाल से बच कर, प्रेम भक्ति मन दीजै॥

शठ सुधरहिं सतसंगत पाई, पारस लोह समाना।

सत की संगत करे जो प्राणी, बने सुसाध सुजाना॥

बिन संगत काम नहिं होगा, समझ लेउ मन अपने।

जह व्यवहार पाँच दस दिन के, रात समय के सपने॥

कहता हूं कह जात हूं भाई, सत्संग करो बनाई।

लोक परलोक में यश और कीर्त्ति, राधास्वामी की शरनाई॥

जो आदमी स्वतन्त्र हो जाता है वह फिर न दुनिया की ओर ध्यान देता है और न इसमें फँसता है। अब मैं हूं। प्रारब्ध कर्म के अनुसार मुझे यह काम करना पड़ा वर्ना मैं इस काम से बहुत घबराता

हूं। मेरे पास दुखी लोग आते हैं। कुछ दिन हुये देहली से एक लड़की अपने दो बच्चों को छोड़ कर यहां आ गई। कहने लगी मैं यहां रहूंगी। मैंने तुरन्त उसके पति को तार दिया और लड़की को समझा बुझा कर देहली लौटा दिया। मनुष्य का मन बड़ा चंचल है। इसको वश में करने को अच्छी संगत रखो। अच्छे ग्रंथ पढ़ो। मन जब गलत विचार उठाये तो इसे सुमिरन ध्यान में लगा दो। समाधि लगाना बड़ा अच्छा है। लेकिन यदि तुम एक घण्टे की समाधि लगा भी लोगे तो समाधि के बाद मन फिर भी सारे दिन ऊट पटांग विचार उठाता रहेगा। इसलिये मन की चौकीदारी करो और सुमिरन ध्यान शुभ विचार और गुरु या डर से अपने विचारों को बदलो। यह है जीने का रहस्य।

बन्दनम् सतज्ञान दाता, बन्दनम् सतज्ञान मय।

बन्दनम् निर्वाणराता, बन्दनम् निर्वाण मय॥

यह देन गुरु देता है लेकिन जो गुरु स्वयं निर्वाण में नहीं है वह क्या देगा? आजकल यदि किसी का रूप किसी के अन्तर उसके अपने विश्वास से प्रगट हो गया और शिष्य ने जाकर गुरु को बताया तो वह संगत से यह कहते हैं कि सुनो भाई यह क्या कहता है ताकि उसकी बात को सुन कर और भी मुर्गे फँस जायें। वह गुरु उसको यह नहीं बताते कि मैं नहीं गया किन्तु यह विश्वास करा देते हैं कि हां मैं गया था और मैंने तेरा काम किया। ऐसे गुरु की संगत से निर्वाण नहीं मिल सकता।

सांची बात कबीरा कहे।

सब के मन से उतरा रहे॥

मैं जानता हूं कि आप ऊंची बात के अधिकारी नहीं हैं। मैं आप लोगों के लिये क्या कर सकता हूं। सिवाय सच्चाई वर्णन करने और अपने अनुभव के मेरे पास कुछ नहीं है। जो कुछ भी तुमको मिलता है या मिलेगा, यह सब तुम्हारे अपने विश्वास, नीयत और कर्म का फल होगा या यह समझो कि ऐसा होना ही था देखो! मेरे पास दो चार स्त्रियां ऐसी आईं कि जिनको माहवारी नहीं होता था। प्रशाद ले गई और उनके लड़के हुये। क्या मेरे प्रशाद से हुये? यह उनका अपना विश्वास था ये ऐसा होना था। जो कुछ है तुम्हारा विश्वास है मगर यह विश्वास है मगर यह विश्वास भी तब ही होता है जब कोई बात तुम्हारे कर्म में होती है अन्यथा विश्वास भी नहीं होता।

मैं स्वयं पिछले कर्म तो अभी भोग रहा हूं। कोई न कोई रोग लगा रहता है। अब एक इच्छा अवश्य है कि मरने के बाद यदि मेरा अस्तित्व स्थित रहा तो शरीर से निकल कर संसार को यह बता जाऊं कि मैं कहां गया। आज तक जो कुछ कहा शरीर में रहते हुये ही कहा।

झीनी झीनी बीनी चदरिया।

काहे का ताना काहे की भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया।

मैं भाग्यशाली हूं कि मैंने अपनी चादर को गन्दा नहीं किया। गलतियाँ मुझसे भी हुईं लेकिन मैंने अपनी गलती को छिपाया नहीं। गलतियाँ सब छिपाते हैं।

इंगला पिंगला ताना भरनी,

सुषुम्ना तार से बीनी चदरिया।

आठ कँवल दल चरखा डोले,

पांच तत्त्व गुन तीन चदरिया॥

सांई की सीयत मास दस लागे,

ठोक ठीक कर बीनी चदरिया।

सो चादर मुन नर मुनि ओढी,

ओढ़ के मैली कीनी चदरिया॥

दास कबीर जतन से ओढ़ी,

ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥

सो चादर गुरुओंने ओढ़ी,

ओढ़ के मैली कीनी चदरिया॥

क्या यह मैल नहीं है कि यह लोग किसी के अन्तर तो जाते नहीं मगर उनको व्यर्थ मूर्ख बना कर उनसे धन मान ले रहे हैं। मैं स्पष्ट वर्णन करता हूं ताकि यह गृहस्थी लोग इनके जाल में फंसकर लुट न जाये। इन महात्माओं से कहना चाहता हूं कि संसार में सच्चाई का व्यवहार करो ताकि लोगों का भला हो और साथ ही तुम लोग भी बुराई से बच जाओ। आखिर एक दिन यहां से खाली हाथ जाना है।

विश्व धर्म

परमसन्त

हजूर परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी।
मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम नामी॥
मंगलम् ऐ दीन बन्धु, दीनानाथ दाता।
मंगलम् अभेद भेद, आनन्द घन त्राता॥
महिमा अनन्त आदि, अन्त कौन गावे।
भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनावे॥
सन्त भेष प्रगट जगत, जीव को चिताया।
काल कर्म फन्द काट, धुर ले पहुंचाया॥
प्रथम तत्त्व निज स्वरूप, पद कमल नमाम
गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस, भजूँ राधास्वामी॥

मैं इस बार दशहरे के अवसर पर दिल्ली आया तो मुझे श्री सुशील कुमार जी महाराज ने बताया कि फरवरी 1974 में विश्व धर्म सम्मेलन होगा और आप उस सम्मेलन में पधारें और दर्शन दें। थोड़े दिन पश्चात् मुझे सन्त कृपाल सिंह जी महाराज का पत्र मिला कि वह इस बार विश्व मानव एकता सम्मेलन मना रहे हैं, उन्होंने भी मुझे नैवेद दिया। मेरा स्वभाव

सत्यप्रिय है, अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि इस संसार के साम्प्रदायिक क्षेत्र के मानव एकता सम्मेलन के विषय में अपनी राय प्रकट करने का क्या तुमको अधिकार है ? मैंने 15 अगस्त 1947 को 'मनुष्य बनो' नामी पुस्तक प्रकाशित करवाई और निज अनुभव के आधार पर मानवता मन्दिर की स्थापना की, मैं छोटी आयु से ही उस मालिक को मिलने के लिये निकला था जिसने यह जगत रचा, जो सर्वाधार है और जिसको संसार के प्राणी नाना रूपों में मानते हैं, इस क्रम में मौज मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरण कंवलों में ले गई। उस पुनीत विभूति ने मुझ पर अत्यन्त दया की, उन्होंने मुझ अज्ञानी, मूर्ख और कामी को शरण दी, नाम दान दिया, आश्रय दिया, मुझ से खेल खिलाया और मुझे उस सर्वाधार का पता दिया जिसकी मैं खोज करता था, एक शब्द में वह लिखते हैं।

तू है क्या तू मरकजे, आलम है ऐ मरदे फकीर।
फिर रही है गिरद तेरे, दुनिया खुद होकर असीर॥
खुद है तू 'ए' और 'अलिफ' के वसूफ से हरदम जुदा।
'ए' मिली आयी खुदी, जब है अलिफ तब है खुदा॥
यह सिफाती नाम सारे, खुद है तू सबका असल।
सबके सब औसाफ क्या हैं, असल के हैं यह सब नकल॥
असल तू है मक्सदे, कोनैन तेरी नकल सब।
ज्ञान ध्यान और गौर, क्या हैं तेरी ही है अकल सब॥
नूर से तेरे मुनव्बर, आसमां के मेहरोमाह।
तेरी ही अजमत के हैं, यह अक्स करदो इज्जो जा॥

तू है दाना, तू है नादाँ, दोनों तुझसे हैं अयाँ।

इनके परदों में हमेशा, जात तेरी है निहाँ॥

तहतो फौको वसत का, तेरे ही ऊपर इन्हसार।

जानकर अनजान है, अनजान का है जानकर॥

तू न अकलोहोश है, और तू कहां बेहोश है।

खेल में है इनके मायल, हस्ती में मदहोश है॥

जागता है सोता है, दोनों से जब ऊँचा चढ़ा।

जात का अपने यहाँ, आया तो पाया है पता॥

इस पते की भी तुझे, दसअसल कुछ परवाह नहीं।

तेरे जैसी शान का, कोई आज तक देखा नहीं॥

यह शब्द हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे चेताने के लिए लिखा था, इसकी मुझे समझ नहीं आती थी, यह ज्ञान प्राप्त कराने के लिये कि मैं वास्तव में क्या हूं, उन्होंने मुझे यह गुरु पदवी प्रदान की थी अर्थात् गुरुयाई करने का कर्त्तव्य सौंपा था। हजूर दाता दयाल जी महाराज की पवित्र विभूति ने, जिसको मैं परम तत्त्व आधार तथा सच्चे राम का अवतार मानता था, उन्होंने मुझे और भी लिखा था–

तू तो आया नर देही में, धर फकीरा का भेसा।

दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा॥

तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।

तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

एक और शब्द में वह मुझे लिखते हैं:–

तेरा रूप है अद्‌भुत, अचरच तेरी उत्तम देही।

जग कल्यान् जगत में आया, परम दयाल सनेही॥

अत: इन कर्त्तव्यों को निभाने तथा इस ऋण को चुकाने के लिए मैंने अपने जीवन के निज अनुभवों के आधार पर जोकि कुछ तो मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज के संस्कारों से, कुछ उन (सत्संगियों) के अनुभवों द्वारा जिन्होंने कि मुझे गुरु माना तथा कुछ उच्च कोटि के सन्तों की बाणियों द्वारा मुझे प्राप्त हुये, यह जान कर कि सर्व साधारण तो सच्चाई तथा शान्ति के इच्छुक नहीं है, यह तो सांसारिक सुखों के इच्छुक हैं और तीसरे 1974 में देश की परिस्थितियों से प्रभावित होकर मैंने 'मनुष्य बनो' की घोषणा की तथा जो आध्यात्मिकता अथवा उससे भी परे परम सत्य तथा यथार्थ ज्ञान के इच्छुक हैं, उनको अलग शिक्षा दी, किन्तु ऐसे व्यक्ति बहुत थोड़े हैं।

कुछ वर्षों से सन्त कृपाल सिंह जी महाराज तथा मुनि सुशीलकुमार जी महाराज ने इन विश्वधर्म सम्मेलनों का क्रम प्रारम्भ किया। मैंने भी अपना कर्तव्य पालन करने के लिए प्रत्येक सम्मेलन पर कुछ न कुछ लिखा, यद्यपि मुझे सर्व साधारण के सम्मुख कुछ कहने का अवसर नहीं दिया गया था। यदि दिया तो वह भी केवल एक बार सात आठ मिनट तथा पचास रूपये प्रवेश शुल्क के रूप में देना पड़ा। पिछले कुछ मास बीते, सन्त कृपाल सिंह जी महाराज ने, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के जन्म दिवस को 'मानव एकता दिवस' का नाम देकर मनाया तथा अब इस सम्मेलन का प्रबन्ध किया गया है। सन्त कृपाल सिंह जी महाराज ने ऐसा क्यों किया? यह तो उनको ज्ञात होगा। वह नाम दान देते हैं, शिष्यों की सुरतें चढ़ाते हैं तथा अपने आध्यात्मिक केन्द्र में आत्म ज्ञान की शिक्षा देते हैं, उन्होंने किस अनुभव के आधार पर 'मानव केन्द्र'

स्थापित किया और वह यह काम कर रहे हैं यह उन्हीं को पता होगा। पर मुझे इतना याद है कि जब सन् 1942 ई. में मैं हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के दरबार में गया था तो उन्होंने कहा था कि मैंने लाखों को नाम दिया है पर केवल 2-3 व्यक्तियों ने रहस्य जाना। जिनमें से एक का नाम उन्होंने सन्त कृपाल सिंह बताया था, शेष दो का मुझे पता नहीं। इस विषय से मैं उनको मर्मज्ञ समझ कर उनका सम्मान व आदर करता हूँ। सम्भव है कि उसी मर्म के सहारे जो मैंने समझा है, उन्होंने भी समझा हो और यह मानव-केन्द्र स्थापित किया हो अर्थात् यह कार्य कर रहे हैं। हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज का एक पत्र जो सन्त कृपाल सिंह जी के नाम था। वह 'दयाल पत्रिका' में प्रकाशित हुआ था उसमें उन्होंने सन्त कृपाल सिंह जी को आदेश दिया था कि सबको एक मंच पर लाने का प्रयास करो।

हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के दरबार में मैं इसलिये गया था, कि मैं सत्य प्रिय होने के नाते सत्यता पूर्वक कार्य करना चाहता था। सन्तमत में सच्चाई और यथार्थ भेद किसी विशेष अधिकारी शिष्य को ही बताया जाता रहा है। कबीर साहब ने धर्म दास जी को सार भेद बता कर कहा:-

धर्म दास तोहि लाख दोहाई, सार भेद नहिं बाहर जाई।

स्वामी जी महाराज ने भी इस प्रकार कहा है-

सन्त बिना कोई भेद न जाने, वह तोहि कहें अलग में।

सत्य प्रिय होने के नाते मुझे सच्चाई वर्णन करनी थी किन्तु मुझे यह डर था कि सन्त मत के अज्ञानी लोग मेरी सच्चाई को सुनकर मेरा विशेष करेंगे। अत: मैं उनके दरबार में गया था कि यदि वे मुझको इस काम से मना कर दें तो मेरे सिर पर जो गुरु ऋण और कर्त्तव्य था, उनके न करने

का जो पाप था वह मुझे न लगे, किन्तु उन्होंने मुझे यह आज्ञा दी कि फकीर! निर्भय होकर काम करो, मैं तुम्हारा संरक्षक रहूंगा।

अत: आज लगभग 35 वर्ष से मैं यह कार्य कर रहा हूँ। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तूने यह 'मनुष्य बनो' की घोषणा क्यों की? क्या तेरे इस कार्य से लोग मनुष्य बन जायेंगे? मनुष्य वह बन सकता है, जिसको सुखी शान्त, स्वस्थ्य और समृद्धिशाली बनने की आवश्यकता है। वह 'मनुष्य' तभी बनेगा जब उसको शारीरिक मानसिक और आत्मिक प्रकृति का ज्ञान होगा, यह ज्ञान उसको किसी पूर्ण अनुभव पुरुष के सत्संग से प्राप्त होता है। आजकल संसार पशु बना हुआ है:-

गुरुं पशु नर पशु, तिरिया पशु, वेदपशु संसार।

मानुष ताही जानिये, जामें विवेक विचार॥

सत्संग में विवेक प्राप्त होता है। मनुष्य वह बन सकता है जिसको मनुष्य बनने की इच्छा है। इच्छा कब होती है? जब मानव दुखी, अशांत और भयभीत होता है। इस विचार से मैंने मनुष्य बनो के निम्नलिखित नियम जो मेरे अनुभव में आये वह कहे:-

1. शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य। मेरा अनुभव यह सिद्ध करता है कि मानव की अशान्ति, भ्रम और रोगों का अधिकतर कारण उसकी शारीरिक भ्रान्ति, मानसिक ब्रह्मचर्य की गिरावट और व्यभिचार का जीवन है। अत:मैं इस पर अधिक बल देता हूँ।

2. दूसरा कारण हमारी घरेलू फूट, एक दूसरे से घृणा, द्वेष तथा भेदभावना है। हम अपने घरों में एक दूसरे के अवगुणों और त्रुटियों की ओर ध्यान देकर घृणा द्वेष करते हैं। अपने कटु वचनों द्वारा दूसरों का हृदय दुखाते हैं। सन्तों के मार्ग में औरों के अवगुण देखना महान अपराध माना

गया है।

3. हमारी अशान्ति का तीसरा कारण हमारी आर्थिक अवस्था की हीनता है। अत: हजूर दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जी महाराज की शिक्षा के अनुसार अपनी जीविका स्वयं ही कमानी चाहिये। जितनी आय हो उसी के अन्तर्गत जीवन यापन करना चाहिए। आजकल जीवन के आदर्श को ऊँचा करने का प्रबल विचार पाया जाता है, किन्तु जीवन की आवश्यकताओं को तो जितना बढ़ाओ, उतनी ही बढ़ती चली जायेंगी। अत: नियम यह है कि-

1. Cut your coat according to cloth.

2. Simple living & high thinking.

4) हमारे दुखों का चौथा कारण हमारा अज्ञान है।

आज तक सन्तों और अन्य धार्मिक नेताओं ने समय की मांग के अनुसार जीवों को जो यह विचार दिया कि कोई बाह्य शक्ति , मानव के अन्तर राम, कृष्ण, मोहम्मद, जैन, बुद्ध, ईसामसीह अथवा गुरु आदि के रूप में प्रकट होकर उसकी सहायता करती है और सच्चाई को गुप्त रखा मैंने इस लोहे के परदे को तोड़ दिया और सत्यता की खुली घोषणा कर दी, कि जो कुछ किसी को प्राप्त होता है, वह उसके अपने ही विश्वास, अपनी ही आस और अपनी ही श्रद्धा का फल प्राप्त होता है। कोई बाह्य शक्ति किसी के अन्तर नहीं आती। चूंकि मानव को यह विचार दिया गया था कि बाह्य शक्ति ही आकर तुम्हारी सहायता करती है। अत: वह उसकी अन्य बाह्य शक्ति ही समझ कर पूजता है। इसका परिणाम यह निकला कि मानव जाति भिन्न-भिन्न धर्मों, पन्थों और गद्दियों में बंट गई और आपस में घृणा व द्वेष, उत्पन्न होने के कारण आपस में लड़ते और एक दूसरे का सिर

काटते हैं।

हम बाहर से भी कुछ ग्रहण करते हैं। क्या? केवल संसार (Impressions & Suggestions)। किसी को पुस्तकों से मिले, किसी को देखने से मिले, किसी को सुनने से मिले, किसी को प्रारब्ध कर्म के अनुसार मिले और किसी को पिछले महापुरुषों के विचार जो इस ब्रह्माण्ड में वर्तमान हैं, उनसे प्राप्त हुये। इन सबका उपचार और सत्यता की घोषणा, मैंने अपने सत्संगों और साहित्य में कर दी। जिनके भाग्य में था, अथवा है उन्होंने उस पर आचरण किया और अपना सांसारिक जीवन हर्ष पूर्वक बिताया।

अब यहाँ विश्व मानव एकता सम्मेलन हो रहा है। सोचता हूं कि क्या विश्व 'मानव एकता' हो सकती है? मेरी सारी आयु इसी धुन में व्यतीत हो गई। विश्व मानव तो एक ओर रही स्वयं अपने अपने मन की एकता रखना भी महा कठिन है। सन्त हो चाहे, असन्त हो, धनी हो अथवा निर्धन हो, राजा हो अथवा भिखारी हो, प्रत्येक व्यक्ति का मन कभी कुछ सोचता है तथा कभी कुछ सोचता है। मैं सोचता हूँ कि जब मानव अपने ही मन को प्रत्येक समय एकता में नहीं रख सकता तो यह कैसे सम्भव है कि समस्त जगत के जो मानव हैं उनमें एकता आ जाये। फिर विचार उठता है कि सम्भवत: मैं ही न कर सका हूँ। यह बड़े-बड़े सन्त महात्मा तथा साम्प्रदायिक नेता गण यह बताने की कृपा करें कि क्या इनके सम्प्रदायों और पन्थों ने इनके अन्तर अथवा अपने अनुयाइयों के अन्तर समता उत्पन्न की है? मैं कहूँगा कि नहीं की। यदि की होती तो हिन्दू और मुसलमान, यहूदी और अरब आपस में क्यों लड़ते। बौद्धों को मार-मार के भारत वर्ष से क्यों बाहर निकाला गया? यह तो सम्प्रदायों और पन्थों की दशा है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सम्प्रदाय में अनेक शाखायें हैं। मुसलमानों में 72

फिरके हैं। सिक्खों में अनेक दल हैं। जैनियों, बौद्ध और ईसाइयों के भी कई दल हैं। हिन्दुओं में तो अनेक शाखायें और दल हैं। प्रत्येक दल वाला औरों के विरुद्ध है तो मेरी समझ में नहीं आता कि मानव एकता कैसे हो सकती है।

फिर सोचता हूँ कि एक ही वर्ग (सम्प्रदाय) के व्यक्ति भी आपस में लड़ते हैं। पाकिस्तान के पंजाबी मुसलमानों और बंगाली मुसलमानों की लड़ाई को आपने सुना और देखा है। शिया और सुन्नी मुसलमान आपस में लड़ते हैं। मजैदी मुसलमानों के साथ दूसरे मुसलमानों का झगड़ा होता रहा अरे! इसको भी छोड़ो। आजकल भाई-भाई को मार रहा है। बाप बेटे का झगड़ा है और पति व स्त्री का झगड़ा है। फिर एकता कहाँ रही?

मैं बड़े सम्मान पूर्वक सन्त कृपालसिंह जी महाराज से और मुनि सुशील कुमार जी महाराज से एवं अन्य महापुरुषों से पूछता हूँ कि आप लोग कैसे मानव एकता ला सकते हैं? बताइये? हाँ! सोसाइटी (सभा) बन गई। इसमें व्याख्यान हो गये। रुपया इकट्ठा हो गया और आदर सत्कार भी मिल गया। इन सम्मेलनों का लाभ भी है कि आपस के प्रेम और मेल मिलाप से एक दूसरे को समझने और जानने का अवसर मिल जाता है। एक दूसरे से विचार मिलते हैं। इससे कई व्यक्तियों के विचारों में परिवर्तन व सुधार होने की सम्भावना होती है, शर्त यह है कि वह अपना एक नेता चुनें और उसकी आज्ञा का पालन करें।

अब मुझे कबीर साहब का शब्द याद आता है:-

पात पात के सींचते, बिरवा गया सुखाय।

माली सींचे मूल को, डार पात हरियाय॥

एकता के न होने का जो असली कारण है, जो मूल है जब तक

उसको ठीक नहीं किया जायगा, एकता का होना असम्भव है। भाषणों, सम्मेलनों अथवा सभाओं से पूर्ण सफलता नहीं होगी। हाँ! एक विचार प्राप्त होगा और वह भी धन्य हैं। कदाचित यह महापुरुष जो यहाँ इकट्ठे हुए हैं। कोई सुगम विधि निकालें। जब तक मानव के मन की संकल्प शक्ति वश में नहीं होगी, मैं समझता हूं कि एकता का आना अत्यन्त कठिन है।

मन को वश में करने की क्या विधि है? हो सकता है ईश्वर की भक्ति कुछ सहायक हो और कुछ सहारा दें, परन्तु जब तक इस मन के रूप को समझने का सच्चा ज्ञान, सच्ची बुद्धि, सच्चा विवेक नहीं प्राप्त होता और मन को वश में करने की सही विधि नहीं प्राप्त होती, मेरे विचार में मानव में समता और एकता नहीं आ सकती। यह समझ, यह विवेक, यह ज्ञान और यह विधि जब भी प्राप्त होगी, किसी सद्गुरु अथवा सत ज्ञान दाता जिसका मन स्वयं समता, एकता और वश में है, उसी से प्राप्त होगी:-

निम्नाकिंत शब्द को ध्यान देकर पढ़िये:-

कोई माने न गुरु की बात, धोखे धार बहा।

सौदा करने हाट में आया, गाँठ की पूँजी घूर मिलाया॥

माया मिली न रामहि पाया, दुविधा साथ रहा॥

इसका इलाज क्या है? किसी सतपुरुष की बात पर आचरण करना। परन्तु संसार वाले सतपुरुष की बात को आजकल मानते क्यों नहीं? मेरा अनुभव यह कहता है कि मन की एकता और समता न होने के कारण जो परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं, उन बुरे विपरीत परिणामों का जब तक अनुभव नहीं होता, जीव मानने के लिये तैयार नहीं होता। अत: मैं उत्साह पूर्वक कह रहा हूँ कि जब तक मानव-जाति पर दुख, क्लेश और

आपत्तियाँ नहीं आयेंगी, यह बात को सुनने के लिये बिलकुल तैयार नहीं होंगे। अपने-अपने कर्म का फल सभी को भोगना पड़ेगा। इस समय जिधर देखो अशान्ति ही अशान्ति है। मन में अशान्ति, घरों में अशान्ति, देश में अशान्ति और संसार में अशांति। हो सकता है इसी कारण से सन्त कृपालसिंह जी महाराज, मुनि सुशील कुमार जी महाराज और अन्य महापुरुषों के मन मस्तिष्क में 'विश्व मानव एकता' का विचार उत्पन्न हुआ हो। इस संसार में Demand & Supply (माँग तथा पूर्ति) का नियम काम करता है और सन्त, परमसन्त, महापुरुष फकीर और वली इस संसार में आये। उन्होंने अपने-अपने विचार के अनुसार और समय की आवश्यकता के अनुसार संसार को सच्चा मार्ग दिखाया और उपदेश दिया:-

निस दिन झूठा बाद विवादा, लम्पट मन इन्द्री के स्वादा।

मन नहिं मारा चित्त नहीं साधा, दारुण कष्ट सहा॥

इस मन को वश में करने के लिये गुरु क्या बताते हैं?

1. सत्संग।
2. सुमिरन, ध्यान तथा भजन।

सत्संग से जीव को सच्चा ज्ञान और सच्ची बुद्धि प्राप्त होती है, शर्त यह है कि सत्संग किसी पूर्ण पुरुष का हो। आजकल तो प्रत्येक व्यक्ति गुरु बन कर बैठ जाता है और उपदेश करने लग जाता है, किन्तु उसका अपना मन तो धन बटोरने, मान प्रतिष्ठा और बड़ाई प्राप्त करने में तत्पर रहता है। ऐसे व्यक्ति के सत्संग में कोई विशेष लाभ नहीं होता। यह सम्मेलन यदि मानव की एकता में कुछ सहायक हो सकता है तो इसकी एक यह भी विधि है कि सत्संग वह करायें जिसका अपना मन समता और एकता में है।

उसके विचारों का प्रचार किया जाय। सम्भव हो सकता है कि कुछ समय के पश्चात् मानव क्लेशों व आपत्तियों को झेलते हुए शान्ति और एकता की ओर आ जाय।

अब रहा यह प्रश्न कि सुमिरन, ध्यान और भजन किस विधि से हो? सर्वप्रथम देशीय परिस्थितियों का विचार रखा जाये और फिर जीव की प्रकृति की ओर ध्यान दिया जाये जिस वातावरण में व्यक्ति उत्पन्न हुआ है उसकी ओर जरूरी ध्यान दिया जाय। प्रत्येक व्यक्ति के भाव भिन्न-भिन्न होते हैं, उनको अपने वश में रखने के लिये और समता में रखने के लिये अलग-अलग साधन और अलग-अलग उपाय अनिवार्य है। यदि देश देशान्तरों के महापुरुष, साधु और फकीर सोच विचार से काम लें तो मानव एकता और मानव समता की कुछ आशा हो सकती है। सबसे बड़ी युक्ति जो मेरी समझ में आई है, वह यह है कि मानव अपने विचारों को अपने (साम्प्रदायिक) भावों को अपने धर्म या पन्थ को अपने अन्तर रखें। औरों से मिलते समय उनके विचारों और भावों का सम्मान करता हुआ उनसे वार्तालाप करें। यदि ऐसा नहीं होता तो राय और विचार भिन्न-भिन्न होने के कारण एकता नहीं हो सकती। अत: औरों के भावों का सम्मान करना और सहनशीलता (Tolerance) बहुत आवश्यक है।

नहिं विचार नहिं हिये विवेका, झूँठी मन की धारी टेका।

सूझा एक न सूझा अनेका, राधास्वामी पद न गहा॥

प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने सम्प्रदाय, अपने अपने पन्थ और अपने-अपने गुरु की टेक रखता है। अन्य व्यक्ति जो उसके मत के नहीं है और दूसरे विचार रखते हैं, उनसे ईर्ष्या और द्वेष रखता है। हम लोग जिस

कदर भी किसी की टेक रखते हैं यह सब धोखा है। क्यों? बहुत से व्यक्ति मुझ पर विश्वास करते हैं और टेक रखते हैं। मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है, उनकी सुरतें चढ़ाता है, औषधियाँ बताता है, पर्चे हल कराता है, मृत्यु समय आकर ले जाता है आदि आदि। किन्तु मैं नहीं होता और न मुझे कोई जानकारी ही होती है। ऐसे व्यक्ति मेरी बड़ाई अथवा प्रसंग करते हैं। ऐसे ही और व्यक्तियों का हाल है। वह भी अपने गुरुओं की बड़ाई करते हैं और उनकी भी सहायता होती है। किन्तु इस अज्ञान के कारण मानवजाति भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों, पन्थों, गद्दियों और डेरों में बंट गई और एक दूसरे से द्वेष करने लग गई।

राधास्वामी पद क्या है? अपना ही आपा।

राधा आदि सुरत का नाम, स्वामी आदि शब्द पहिचान।

अपने आप का ज्ञान, अपने आपको जानने की शिक्षा और निज स्वरूप अथवा निज नाम की शिक्षा सब धर्मों में है। किसी ने उसको किसी प्रकार से बयान किया किसी ने किसी विधि से वर्णन किया। मन्तव्य व अर्थ सब का एक है, केवल वर्णन-शैली ही भिन्न है।

जो कुछ किसी को प्राप्त होता है, वह उसके अपने विश्वास, अपनी श्रद्धा और अपने दृढ़ निश्चय का ही फल मिलता है। बाहर के गुरु ने तो मानव को अच्छा विचार, विश्वास और सत्य ज्ञान देता है। यदि इस बात का ज्ञान हो जाय तो हमारी बहुत सी विपत्तियाँ, क्लेश और भ्रम जो इस धोखे से उत्पन्न होते हैं वह दूर हो सकते हैं। इस धोखे के कारण ही सहस्रों धर्म सम्प्रदाय, सहस्रों पन्थ और सहस्रों गद्दियां बन गई। इस धोखे से लाभ भी है। वह यह है कि जीव चूंकि निबल और अबल है, सहारा चाहता है। अपने ऊपर तो वह विश्वास कर नहीं सकता और न उसमें इतनी शक्ति ही

है तो इस धोखे और अज्ञान के कारण उसको आनन्द और हर्ष प्राप्त होता है और वह आशावादी हो जाता है। किन्तु इस प्रकार से आशावादी होने और लाभ उठाने से संसार में एकता नहीं आ सकती।

मैंने विश्व मानव एकता पर विचार किया है कि क्या कोई ऐसा उपाय है जिससे मानव का कल्याण हो सके? इस संसार को रखने वाली कोई बड़ी भारी शक्ति है और वह शक्ति इन नक्षत्रों और ग्रहों के प्रभाव के अन्तर्गत काम करती हैं। इसका प्रमाण देता हूँ। मैंने जन्त्री में पढ़ा है कि ग्रहों के कारण पाकिस्तान पर ढाई वर्ष आपत्ति रहेगी। अब कोई लाख प्रयास करे इन ग्रहों से बचना कठिन है। हिन्दू जाति ने बहुत खोज (Research) की है। यह ज्योतिष विद्या गलत नहीं किन्तु अपूर्ण अवश्य है क्योंकि गत वर्ष में नव ग्रहों के प्रभाव वही लिये जाते थे, अब तीन और नये ग्रहों की खोज न होती। उनके भी प्रभाव अब सम्मिलित किये जाते हैं। अब मैं सोचता हूं कि यह अनुकूल या प्रतिकूल जो कुछ भी हो रहा है, क्या यह Universal (ब्रह्माण्डीय) मन के कर्मानुसार नहीं है? यदि ऐसा मान लिया जाय तो हमारे तमाम प्रयत्न और सुझाव व्यर्थ ज्ञात होते हैं। सन्त कबीर ने भी अपने एक शब्द में स्पष्टतय: कहा है कि यह सारा खेल मंक गति ही का है।

कर्म गति टारे नाहिं टरी।

मुनि वशिष्ठ से पण्डित ज्ञानी, सोध के लगन धरी।

सीता हरन मरन दशरथ का, वन में बिपत्ति परी॥

कहां वह फन्द कहां वह परिधि, कहां वह मिरग चरी।

सीता को हर ले गया रावण, सोने की लंका जरी॥

नीच हाथ हरिचन्द बिकाने बलि पाताल घरी।

कोटि गाय नित पुन्न करत नृप, गिरगिट जोनि परी॥

पाण्डव जिनके आप सारथी, तिन पर विपत परी।

दुर्योधन को गर्व घटाओ, यदुकुल नाश करी॥

राहू, केतु भानु, चन्द्रमा, विधि संयोग परी।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, होनी होते रही॥

यही बात मेरी समझ में आई है। यह तो वर्तमान संगठनों और सम्मेलनों का विचार इन महापुरुषों के विचार में सूझा है, यह भी कर्मगति ही है अधीन है। क्यों? प्लाटो ग्रह तुला राशि में आ रहा है और यूरेनस पहले ही तुला राशि में है। इन दोनों ग्रहों के प्रभावानुसार जो दसवें घर में पड़े है, सात आठ वर्ष में भारत वर्ष एक अति समृद्धिशाली और महानदेश इस विश्व में हो जायगा। यह जो मानव एकता और मानव कल्याण का विचार इस समय आता है, यह भी प्रकृति के खेल ही के प्रभावाधीन आ रहा है और मुझे पूर्ण आशा है कि यह विचार फैलकर मानव जाति के लिये लाभदायक सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक जीव के अपने प्रारब्ध कर्म भी होते हैं। मेरा अपना निजी विचार है कि जब तक श्रेष्ठ व्यक्ति शासन में नहीं आयेंगे तब तक सर्व साधारण में एकता और मानवता का आना असम्भव है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि वह समय निकट आ रहा है जबकि हमारे देश को वर्तमान प्रजातन्त्र की चुनाव पद्धति में परिवर्तन करना पड़ेगा। मानव का जीवन उसके विचारों पर निर्भर है। अपने भाव से व्यक्ति अच्छे स्वभाव वाला बन जाता है और दुर्विचार से वह निकृष्ट स्वभाव वाला बन जाता है।

मैं सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि मानव जाति का कल्याण हो। हममें एकता, समता, प्रेम और स्नेह का भाव उत्पन्न हो और इस जीवन की

हमारी यात्रा पूर्ण हो। मैं निजी तौर से स्वयं निवृत्ति मार्ग का अनुयायी हूँ। यह काम जो मैंने किया है अथवा करता हूँ यह केवल हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज की दया और उनके संस्कार से किया करता हूँ। सम्भव है कि मेरे पिछले जन्म के कर्म भी हों। अत: मैंने विवश होकर यह काम किया है। एक बात मैं और कहे देता हूँ कि जो व्यक्ति अपने आप को इस मानसिक संसार से ऊपर रख सकता है उसके संकल्प में यह शक्ति होती है वह इस Universal कर्म को बदल सकता है अथवा न्यूनाधिक कर सकता है। हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने मुझे एक शब्द में लिखा है:-

जीव अनेक रहें जग माहीं, पर फकीर कोई एका।

सम्भव है कि आप महापुरुषों में कोई ऐसा व्यक्ति हो जो मन से ऊँचा रहता हो और उसका संकल्प काम कर जाय। मैंने अपने जीवन में फकीर बनने का बड़ा प्रयत्न किया है। किन्तु यदि सत पूछते हो तो अब तक भी कभी-कभी गिरता रहता है।

मैं सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि इस कान्फ्रेंस (सम्मेलन) का शुभ संकल्प यदि सचमुच मानव-कल्याण के लिये हैं और किसी के निजी स्वार्थ के लिये नहीं है तो यह अवश्य संसार में फले और फूले।

सबको शान्ति!

सूचना

मानवता मन्दिर पत्रिका पढ़ने वाले समस्त भाई बहनों से निवेदन है कि अपना मोबाइल नं./दूरभाष नं. भेजने की कृपा करें क्योंकि डाक-विभाग का कहना है कि हर पत्रिका पर पता (Address) के साथ फोन नं. लिखना अनिवार्य है। इसके अलावा अगर किसी भी सत्संगी भाई-बहन को पत्रिका से सम्बन्धित कोई बात करनी हो तो हमारे लाईब्रेरी के फोन नं. 01882-244145 तथा अन्य किसी तरह की जानकारी के लिए 01882-243154 पर सोमवार से शनिवार तक सम्पर्क कर सकते हैं।

राधास्वामी

सूचना

सभी दानी सज्जनों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम **Punjab National Bank, Hoshiarpur** के दो **Account Numbers** दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी **Faqir Library Charitable Trust A/c No. 0206000100057805, IFSC Code-PUNB0020600** और **Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code-PUNB0020600** में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवा सूचित कर दें, ताकि दानी सज्जनों की सूची में उनका नाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव,
फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

आभार प्रकट

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि दी है। परमपूज्य परमदयाल जी की परमकृपा इन सज्जनों व इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है

-सचिव

S.No.	DONOR	Amount
1.	H.H. Dayal Kamal Ji Maharaj	10000/-
2.	Sarabjit Kaur, Urmar Tanda	51000/-
3.	Anita Mehta, Hoshiarpur	50000/-
4.	Lalita Mudgal, Jaipur	32000/-
5.	Shatrughan Thakur	28000/-
6.	Smt. Sandhya Sharma Ji, Hoshiarpur	24000/-
7.	R.K. Bhardwaj, Ludhiana	22000/-
8.	Praveen Kumar Chopra, Khanna	21000/-
9.	Vasdev Raheja, Delhi	15000/-
10.	Rajesh Hiranandani, Mumbai	14500/-
11.	Harish Shah, Mumbai	14000/-
12.	Neel Kamal, USA	14660/-
13.	Anand Sihra Family, Canada	12800/-
14.	Sanjeev Ved Prakash Dua, Mumbai	10002/-
15.	Chetan Jai Singhpure, Karnataka	10000/-
16.	Pranjali Jai Singhpure, Karnataka	10000/-
17.	In Momory of Late Sub. Maj. Karam Singh Passi Kandi	10000/-
18.	Anju Sharma, Mumbai	10000/-
19.	Umang Kothari, Mumbai	10000/-
20.	Paras Kothari, Mumbai	10000/-
21.	A.N. Roy, Mumbai	7200/-
22.	Lajpat Rai, Hoshiarpur	5200/-

23.	Ach. Kuldeep Sharma Ji, Batala	5100/-
24.	Swaroop Singh, Hoshiarpur	5100/-
25.	Rosy Sharma	5000/-
26.	Kapil Trehan, Jalandhar	5000/-
27.	Hari Singh Bhatia, Hoshiarpur	5000/-
28.	Dasondha Singh, U.K.	5000/-
29.	Jagwanti Devi, Khunyara (HP)	5000/-
30.	Mrs. Vijaya, Mumbai	5000/-
31.	Lakshay Gupta	4200/-
32.	Ved Prakash	4000/-
33.	Shakti Chand Sharma, Jasai (HP)	3300/-
34.	Surinder Kumar, Hoshiarpur	3100/-
35.	G.S. Raghav, Hoshiarpur	3100/-
36.	Rakesh Sharma, Lucknow	2100/-
37.	MS Yadav, Gurgaon	2100/-
38.	Sanjeev Sharma, Chandigarh	2100/-
39.	Suraksha Devi, Damin, Hsp	2100/-
40.	Birbal Koundal, Bara Pind	2100/-
41.	Sunil Kumar Sood	2000/-
42.	Labh Singh/Surinder Kaur, Ludhiana	2000/-
43.	In Memory of Late Krishna Lal Ji	2000/-
44.	Dr. J.K. Sama, Gurgaon	2000/-
45.	Ganesh C. Kaushal, Adampur Doaba	1750/-
46.	Kalu Ram Upadhyay, Muzaffar Nagar	1500-/
47.	Sunil, Hoshiarpur	1440/-
48.	Savitri Devi, Mahilpur	1500/-
49.	Rajni Passi Kandi	1300/-
50.	Satinder Kumar, Jalandhar	1300/-
51.	Praveen Sareen, Jalandhar	2200/-
52.	Narinder Kakkar, Jalandhar	1100/-
53.	Bram Shankar Jimpa, Hoshiarpur	1100/-
54.	Dr. Dilbag Singh, Hoshiarpur	1200/-
55.	Kush, Hoshiarpur	1100/-
56.	Narinder Chopra, Jalandhar	1100/-

57.	Rajinder Singh, Hoshiarpur	1100/-
58.	Sarita, Passi Kandi	1100/-
59.	Jagjit, Hoshiarpur	1100/-
60.	Anand Prakash, Adampur Doaba	1100/-
61.	Dayal Medicos, Hoshiarpur	1000/-
62.	Anita Kumari, Hsp	1000/-
63.	Satya Devgan, Amritsar	1000/-
64.	B.S. Sharma (Retd., H/M) Sihor Pain	1000/-
65.	Vinod Kumar, Jalandhar	1000/-
66.	K.R. Dikshit, Ghaziabad	1000/-
67.	Jagdish Prasad Srivastav, Jaunpur (UP)	800/-
68.	Satpal Devgan, Amritsar	500/-
69.	Madan Lal, Hsp	500/-
70.	Gurmeet Singh, Adampur Doaba	500/-
71.	Champa Devi, Burdman	500/-
72.	Sardar Studio, Adampur Doaba	500/-
73.	In Memory Late Smt. Sumitra Devi Ji	500/-
74.	Harpal Singh, G.B. Nagar	500/-
75.	Prem Nath, Manjra (HP)	500/-
76.	Pushpa Sood, Hsp	500/-
77.	Ambala Chat House, Hsp	500/-
78.	Joginder Singh, Sangnoi	500/-
79.	Ashish, Hsp	500/-
80.	Gurdev Mehmi, Hsp	500/-
81.	L.N. Kumar	500/-